अमरीका का परिचय

सम्पादक

पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र

प्रकाशक

ऐज्यूकेशनल पब्लिशिंग हाउस

बनारस

१९४१

मूल्य ।=)

अमेरिका का परिचय

नई दुनिया के डाक्टर

चौधरी रघुनाथप्रसाद की मिलनसारी का यह हाल था कि किसी की एक बार उनसे भेंट भर हो जाय, बस वे उसके घनिष्ठ मित्र बन जाते। इतना ही नहीं वरन् वे सदा इस घनिष्ठता को स्थिर रखने का प्रयत्न भी करते रहते थे। यही कारण था कि दो ही चार दिन की बीमारी में डाक्टर साहब से उनकी घनिष्ठता हो गई। यद्यपि चौधरी साहब अब रोग-ग्रस्त न थे, परन्तु फिर भी डाक्टर साहब नित्य संध्या को टेनिस खेलने के पश्चात् चौधरी साहब की कोठी में जमे दिखाई देते। घंटे दो घंटे इधर-उधर की गपशप लड़ती और फिर अपने घर को चल देते। डाक्टर साहब अब केवल डाक्टर ही नहीं वरन् चौधरी साहब के परम मित्रों में थे।

संध्या हुई कि डाक्टर साहब हाथ में रैकेट लिये हुए चौधरी साहब की कोठी की ओर आते हुए दिखाई देते।

नौकरों-चाकरों में 'नई दुनिया के डाक्टर' आ रहे हैं का शोर-सा मच जाता। नन्दकिशोर के साथ कुन्ती भी दौड़ती हुई बाहर आ जाती। डाक्टर साहब आते ही हैट मेज़ पर रख देते और नन्दकिशोर से हाथ मिलाकर कुन्ती के सिर पर हाथ फेरते हुए एक आरामकुर्सी पर लेट जाते और चौधरी साहब से बातचीत आरम्भ हो जाते। चौधरी साहब बड़े ही काव्यप्रेमी थे और उन्हें साहित्यचर्चा में कुछ विशेष आनन्द मिलता था। मगर डाक्टर साहब कविता और कला दोनों ही से कुछ विशेष रुचि न रखते थे। वे सामाजिक सुधार तथा शिक्षाप्रसार के हामी थे। लेकिन इसके साथ ही साथ बड़े ही हँसोड़ भी थे, उनका कहना था कि हँसने से स्वास्थ्य सुन्दर रहता है।

सहसा कुन्ती ने डाक्टर साहब का हाथ पकड़कर पूछा 'क्या आप नई दुनिया के डाक्टर हैं?'

'नई दुनिया' का वाक्य बिलकुल नया था, न तो चौधरी साहब ही इसका अर्थ समझ सके और न डाक्टर साहब ही। कुन्ती ने पुनः हाथ हिलाते हुए कहा—क्या मुझे बता दीजिए कि आप किस भाँति नई दुनिया के डाक्टर हैं?

नन्दकिशोर—डाक्टर साहब! ये जितने नौकर हैं ये सब आपको नई दुनिया के डाक्टर कहते हैं। कुन्ती ने सुना है वही पूछ रही है।

अब तो यह बात सबकी समझ में आगई और सब लोग बड़े ज़ोर से हँस पड़े।

डाक्टर साहब (कुन्ती की ओर मुँह करके) हाँ बेटी! मैं नई दुनिया का डाक्टर हूँ। क्या तुम नहीं जानतीं कि नई दुनिया किसे कहते हैं? क्या तुमने भूगोल की पुस्तक में यह नहीं पढ़ा है कि अमेरिका को नई दुनिया कहते हैं?

कुन्ती—हाँ, यह तो मैंने पढ़ा है, लेकिन जब गोपाल (नौकर) नई दुनिया के डाक्टर कहता था तो मैं यह बिलकुल ही न समझ सकी।

नन्दकिशोर—डाक्टर साहब आप कितने समय तक अमेरिका में रहे हैं?

डाक्टर साहब—कई वर्ष तक, क्या तुम वहाँ के सम्बन्ध में सुनने के इच्छुक हो?

नन्दकिशोर (चौधरी साहब की ओर देखकर)—जी हाँ।

चौधरी साहब—डाक्टर साहब! ये लोग भिन्न-भिन्न देशों का हाल सुनने के बड़े ही प्रेमी हैं। अब थोड़ी देर में ये लोग खाना खाकर आँगन में बैठेंगे, पुस्तकें पढ़ी जायँगी, माता जी से मिस्र तथा जापान के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे जायँगे, वह बेचारी कुछ सुनी-सुनाई और कुछ किताबों से पढ़कर इन्हें सुना देंगी। और अब तो थोड़े दिनों से यह नियम-सा हो गया है कि ये लोग स्वयं अलग-अलग पुस्तकें पढ़कर तैयार होते हैं

फिर शाम को बारी-बारी से पढ़ी हुई बातों का वर्णन करते हैं।

डाक्टर साहब—यह तो बहुत अच्छा विचार तथा लाभदायक खेल है।

नन्दकिशोर—तो क्या डाक्टर साहब ! आप अमेरिका के सम्बन्ध में कुछ बताने की कृपा करेंगे ?

डाक्टर साहब—क्यों नहीं, अवश्य करूँगा।

चौधरी साहब—सुनने का इच्छुक तो मैं भी हूँ।

डाक्टर साहब—इच्छा होना ही चाहिए, इसके अतिरिक्त यदि बातें आकर्षक, आनन्ददायक तथा लाभदायक हों तो फिर कहना ही क्या ? जो जाति उन्नति-पथ की ओर अग्रसर हो रही हो उसके बारे में ज्ञान भी प्राप्त होगा और उससे अपनी दशा सुधारने में सहायता भी मिलेगी।

अमेरिका को लोग 'नई दुनिया' के नाम से पुकारते हैं। इसका कारण यह है कि इसका पता हाल ही में लगाया गया है। लेकिन वास्तविकता य [illegible] कि वहाँ के निवासियों की रहन-सहन, उनकी लगन, उनका परिश्रम, उनकी स्वच्छता तथा उनकी खेती आदि सभी कुछ तो हम लोगों के लिए अनुकरणीय है।

चौधरी साहब—डाक्टर साहब ! यह भाषण तो अब आप बन्द कीजिए और इन लड़कों को वहाँ की कुछ आँखों-देखी घटनायें सुनाइए।

डाक्टर साहब—भाषण तो मेरा खत्म होने का नहीं, आप जानते हैं कि ऐसे अवसरों पर मैं अपने को रोक नहीं पाता, और अमेरिका के सम्बन्ध में तो ऐसे बहुत-से अवसर आयेंगे।

नन्दकिशोर—डाक्टर साहब! पहले तो आप उस देश के बारे में बताइए जिससे वहाँ के निवासियों के सम्बन्ध में समझने में सरलता होगी।

डाक्टर साहब—ठीक कहते हो, मैंने भी यही सोचा था।

अमेरिका की खोज

यह तो तुम जानते ही होगे कि अमेरिका की खोज 'कोलम्बस' नामक व्यक्ति ने की थी। यह मनुष्य जनेवा (इटली देश) का निवासी था। इसका पूरा नाम क्रिस्टोफर कोलम्बस था। इसने सन् १४९२ ईसवी में इसकी खोज की थी। इस घटना को आज ४४८ साल हो गये हैं। यह भी कहा जाता है कि योरप के कुछ यात्री सन् १००० ई० में अमेरिकातट तक पहुँच गये थे, लेकिन इससे कोलम्बस की प्रथम खोज के श्रेय को किंचित् मात्र भी धक्का नहीं पहुँचता। यही कारण है कि योरपवाले भी इस घटना से अपरिचित ही रहे।

अमेरिका के निवासी

अमेरिका में प्राचीन निवासियों के अतिरिक्त अन्य देशों के निवासी भी बसते हैं। यहाँ के प्राचीन निवासी अमेरिकन

इण्डियन या रेड इंडियन कहलाते हैं। इनका रंग लाली लिये हुए बादामी है।

विशेषतया उत्तरी अमेरिका में दिन-प्रतिदिन इनकी संख्या घटती जा रही है और इनके स्थान पर गोरे रंग के लोग बसते जा रहे हैं। रेड इंडियनों में भी बहुत-सी उपजातियाँ हैं। इन उपजातियों में से कुछ ने नवीन सभ्यता को अपनाने में प्रशंसनीय उन्नति की है।

योरपवालों को जब इस नई दुनिया का पता चला तो कुछ लोगों ने मेक्सिको, मध्य अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका में निवास करना आरम्भ कर दिया और इन लोगों ने वहाँ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के सम्बन्ध में काफ़ी उन्नति की। जैसे बड़े-बड़े शानदार नगर बसाये, एक सुन्दर शासन-प्रणाली का सृजन किया तथा कृषि में प्रशंसनीय उन्नति की।

अमेरिका की खोज के बाद ही अर्थात् १५ वीं शताब्दी के अन्त में योरप की समस्त जातियाँ यहाँ आकर इकट्ठा हो गईं। फल यह हुआ कि यहाँ के प्राचीन निवासी जो योरपवालों की अपेक्षा कमज़ोर थे नष्ट होने लगे। जो कुछ शेष बचे वे कुछ तो गोरों में मिल-जुलकर और कुछ अफ़रीका के हबशियों में मिलकर अपनी संस्कृति तथा सभ्यता खो बैठे। यह वर्णशंकर जाति अपनी कुछ विशेषताओं के कारण अलग-अलग नामों से पुकारी जाती है। जैसे, मिस्तमेज़ो, मुलातोज़ो जेम्स इत्यादि।

उत्तरी अमेरिका के निवासी अधिकतर अँगरेज़ जाति के हैं। इनके अतिरिक्त जर्मन तथा स्कैंडनेविया जाति के लोग भी

यहाँ बसते हैं। मध्य अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका में पुर्तगाल तथा स्पेननिवासियों के वंशज बसते हैं तथा धुर उत्तरी अमेरिका में इस्कीमो लोग रहते हैं।

नन्दकिशोर—इस्कीमो के सम्बन्ध में मैंने पढ़ा है, ये लोग उत्तरी शीतकटिबंध में रहते हैं।

डाक्टर साहब—ठीक वही इस्कीमो।

चौधरी साहब—डाक्टर साहब! लोगों का ख्याल है कि अमेरिका के प्राचीन निवासी एशिया महाद्वीप से आकर यहाँ रहने लगे थे, कहाँ तक सच है?

डाक्टर साहब—सम्भव है कि ऐसा ही हो, मगर कब और किस भाग से आये, इसका कोई पता नहीं चलता।

अमेरिका की जन-संख्या

इस नई दुनिया की जन-संख्या १८ करोड़ अनुमान की जाती है। जिसमें से १२ करोड़ गोरे रंगवाले हैं, २ करोड़ ८० लाख वर्णशंकर, १ करोड़ ५० लाख हबशी और १ करोड़ ३० लाख रेड इंडियन हैं।

नन्दकिशोर—और ये सबके सब ईसाई हैं?

धर्म

डाक्टर साहब—उत्तरी अमेरिका के अधिकांश निवासी प्रोटेस्टेंट मत के ईसाई हैं। मध्य तथा दक्षिणी अमेरिका के

अधिकतर लोग रोमन कैथोलिक मत के ईसाई हैं और कई लाख रेड इंडियन हैं जिनका कोई धर्म नहीं है।

जल-वायु

जल-वायु की दृष्टि से उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका से बिलकुल भिन्न है। यह महाद्वीप एशिया और योरप से मिलता-जुलता है। उत्तरी अमेरिका में प्राचीन महाद्वीपों की भाँति पूर्वी भाग पश्चिमी भाग की अपेक्षा अधिक ठंडा है। दक्षिणी अमेरिका के एक बड़े भाग की जल-वायु शुष्क तथा ठंडी है। अमेजन नदी के तट पर लगभग १० महीने तक वर्षा होती है। उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में बहुत-से ऐसे स्थान हैं जहाँ बहुत कम या बिलकुल ही वर्षा नहीं होती।

खनिज पदार्थ

मूल्यवान् खनिज पदार्थों की दृष्टि से अमेरिका एक बहुत धनी देश है। यहाँ की खानों में सोना और चाँदी अधिक निकलता है। कोयला, लोहा, ताँबा, टीन तथा पारा इत्यादि धातुएँ भी यहाँ की खानों में अधिकता से पाई जाती हैं। मिट्टी के तेल के कुएँ भी बहुत-से हैं। हीरा तथा अन्य दूसरे मूल्यवान् पत्थरों की भी खानें यहाँ हैं। अमेरिका के सम्बन्ध की इस प्रकार की बातें भूगोल में पढ़ाई जाती हैं। इसलिए इन बातों की चर्चा करके व्यर्थ समय मैं खोना नहीं चाहता। मैं अमेरिका की वही बातें सुनाना चाहता हूँ, जिनका विशेष

प्रभाव मुझ पर पड़ा है और जिन बातों के जानने की हम भारतीयों को परम आवश्यकता है। इनमें से पहली शिक्षा-प्रणाली है।

शिक्षा

शिक्षा से मेरा उद्देश्य उस शिक्षा से नहीं है, जिसका प्रचार हमारे देश में है। मेरा मतलब उस औद्योगिक शिक्षा से है। यह आर्थिक काल है, इसलिए ऐसे समय में उस शिक्षा की आवश्यकता है, जो हमारे जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक हो।

मेरे विचार से भारत के ग्रामीण स्कूलों में औद्योगिक शिक्षा अनिवार्यरूप से कर दी जानी चाहिए। पाठ्य-क्रम और विषय इस ढंग के बनाये जावें कि भारतीय विद्यार्थी कृषि, उद्योग-धंधे तथा यन्त्रों की ओर आर्किषत होने लगें। आज के नवयुवक विद्यार्थी ही कल देश के नागरिक बनेंगे, इसलिए इनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि ये लोग अपने पैरों खड़े होकर देश की निर्धनता दूर करने के योग्य बन सकें। इसका एक ही उपाय है और वह यह कि भारत में औद्योगिक शिक्षा का प्रचार होना चाहिए।

चौधरी साहब—इससे आपका मतलब है कि दूसरी शिक्षायें जैसे क़ानून, दर्शन आदि बिलकुल रोक दी जावें?

डाक्टर साहब—नहीं, बिलकुल नहीं, लेकिन इन विषयों के

लिए दो ही चार मनुष्य उपयुक्त होते हैं और इस समय देश को इनकी कोई विशेष आवश्यकता भी नहीं है। सबसे बड़ा प्रश्न तो जीवित रहने का है। लोग दर्शन और साहित्य के बिना भी जीवित रह सकते हैं मगर बिना खाये-पिये तो जीवित रहना सम्भव ही नहीं है। इसलिए मेरी प्रार्थना यह है कि विद्यार्थियों को सबसे पहले अपनी रोटी के प्रश्न को हल कर लेना चाहिए। अमेरिका ने इस भेद को भली भाँति जान लिया है। हमारे स्कूलों को हमारी आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए। व्यापारिक तथा औद्योगिक शिक्षणालय जो आज अमेरिका में स्थापित हैं वे इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि ऐसी शिक्षा ही जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगी।

व्यावसायिक शिक्षा

अमेरिका के सहायक स्कूलों में चमड़े की चीज़ें बनाना, कपड़ा धोना, लोहा करना आदि सभी कुछ सिखाया जाता है। धुलाई का काम कठिन है इसलिए पहले उन्हें तरह-तरह के मसाले बताये जाते हैं जो कपड़े के दाग़ तथा मैल को साफ़ करने में प्रयुक्त किये जाते हैं। कपड़े में साबुन किस भाँति लगाना चाहिए और कौन कपड़ा किस भाँति धोना चाहिए आदि धुलाई-सम्बन्धी सभी बातों की शिक्षा दी जाती है।



बालिकाओं को भोजन बनाने की शिक्षा दी जा रही है।

धुलाई का तो मैंने एक उदाहरण-मात्र दिया है इसी भाँति और भी व्यावसायिक शिक्षायें दी जाती हैं। हम भारतीयों को भी इसी शिक्षण ढंग का अनुकरण करना चाहिए। मेरा कहना यह कदापि नहीं है कि भारत को उन्नतिशील देशों का अनुसरण आँख मूँदकर किये जाना चाहिए वरन् उन्हें अपनी दृष्टि को इस योग्य बना लेना चाहिए कि जहाँ कहीं कोई भी अच्छी बात देखें उसे अपने देश और आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाना चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा, जिसकी चर्चा मैं अभी कर चुका हूँ, भारत के लिए परमावश्यक है। पुस्तकों की शिक्षा की धूम भारत में काफ़ी मच चुकी है, अब तो वह समय आगया है कि इस पुस्तक की शिक्षा का विरोध ज़ोर-शोर से करना चाहिए। क्योंकि यह कहना कि उच्च शिक्षा के बिना देश उन्नति नहीं कर सकता सरासर ग़लत है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उच्च शिक्षा कोई बुरी चीज़ है। इससे ज्ञान की वृद्धि अवश्य होती है परन्तु देश की आर्थिक दशा सुधरे बिना ज्ञान का कोई भी महत्त्व नहीं है। दर्शन और साहित्य भुला देनेवाले विषय नहीं हैं लेकिन साथ ही साथ देश को मिलों तथा घरेलू उद्योग-धंधों की भी आवश्यकता होती है। कृषि की उन्नति भी परमावश्यक है। देश को ऐसे मनुष्यों की भी आवश्यकता पड़ती है जो मानसिक परिश्रम के साथ ही साथ शारीरिक परिश्रम भी कर सकें। इन बातों के लिए ग्रामीण

स्कूलों के सुधार की सख्त जरूरत है। आप अमेरिका के ग्रामीण स्कूलों के बारे में जरा ध्यान से सुनिए।

अमेरिका के देहाती स्कूलों की शिक्षाप्रणाली

सबसे पहले वहाँ के विद्यार्थियों को देखकर ही जी प्रसन्न हो जाता है। उनके चेहरों से स्फूर्ति तथा उत्साह टपका-सा पड़ता है। उनके हाथ-पैर साफ़-सुथरे होते हैं। उनकी पोशाकें मिलती-जुलती तथा साफ़ होती हैं। वे लड़के अपने बालों में कंघी किये हुए स्कूल में प्रवेश करते हैं और अपना हैट तथा लबादा बाहर के एक कमरे में रख देते हैं जो इसी काम के लिए होता है। फिर अपनी पुस्तकें लिये हुए वे लोग अपनी-अपनी कक्षाओं में जाते हैं। वे कमरे गर्म तथा आराम देने वाले होते हैं। कमरे का सामान साधारण पर साफ़ और सुन्दर होता है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक डेस्क तथा एक स्टूल होता है। मास्टर के लिए एक मेज़ तथा एक कुर्सी होती है। एक चीज़ जिस पर विशेष कर दृष्टि पड़ती है वह उन देश-भक्तों के चित्र हैं जिन्होंने देशोन्नति के लिए महत् कार्य किये हैं। वहाँ की प्रत्येक वस्तु सुरुचिपूर्ण दिखाई देती है। और तो और उस स्थान को देखने से ही कुछ न कुछ सीखने की इच्छा बलवती हो उठती है। कोलाहल तो नाम को भी नहीं होता है। ऐसी शान्ति छाई रहती है कि यदि सुई भी गिर पड़े तो उसके गिरने का शब्द साफ़ सुनाई दे जायगा।



स्कूल के बाहर लड़कों का मनोविनोद

पढ़ाई के ढंग भी वहाँ और हैं। प्रातःकाल से पढ़ाई आरम्भ होती है। मास्टर आरम्भ में कोई राष्ट्रीय गीत या कहानी या किसी विद्वान् का कोई शिक्षाप्रद लेख पढ़कर सुनाता है। यह लेख, कविता या कहानी अधिकांश में वही होती है जो लगभग अमेरिका का प्रत्येक बालक जानता है। उनका राष्ट्रीय गीत हमारे यहाँ के पंडित रूपनारायण पाण्डेय-लिखित :—

"यह प्यारा देश हमारा—सारी दुनिया से न्यारा।" से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। क्या तुम्हें भी यह गीत याद है?

नन्दू—जी हाँ! याद है।

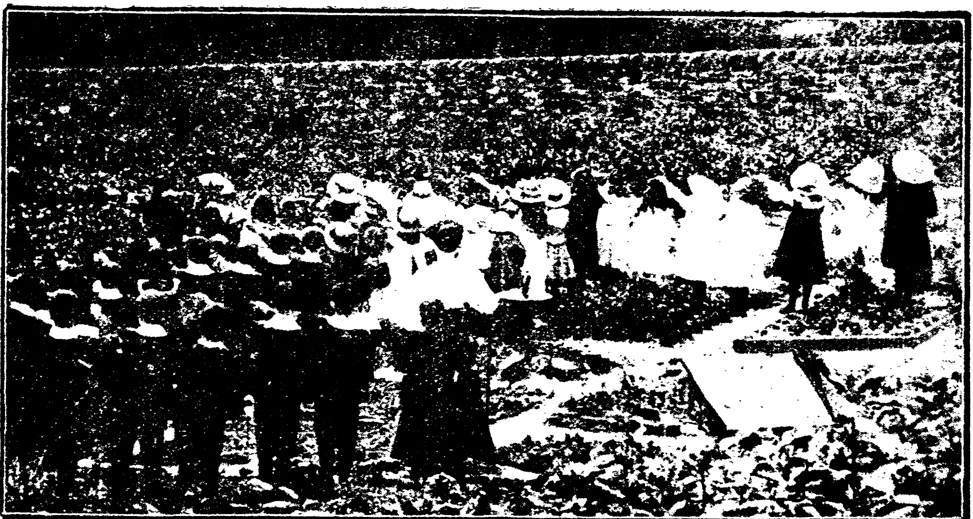
डाक्टर साहब—खैर, अब और उन लड़कों का हाल सुनो। स्कूल का अधिकतर समय ६ से ४ बजे शाम तक होता है। १२ से एक तक खाना खाने की छुट्टी होती है। इस थोड़े से समय में लड़के इधर-उधर खुली हवा में खेलते हैं। इससे यह लाभ होता है कि लड़कों का जी पढ़ाई से ऊबता नहीं है और उनके मस्तिष्क भी नहीं थकते। लड़कों के लिए खुली हवा में खेलने के अतिरिक्त और कोई दूसरा ढंग इतना लाभदायक नहीं है। इस खेल-कूद के समय में भी उनका मास्टर उनके साथ रहता है जो उस समय एक मास्टर के रूप में नहीं वरन् एक साथी के रूप में होता है। यह मास्टर उनके साथ

खेलता है कूदता है और उन्हें खेल-सम्बन्धी शिक्षा भी देता जाता है। इसलिए खेल का आनन्द और भी बढ़ जाता है। वहाँ मास्टर लड़कों के लिए कोई हौवा नहीं होता वरन् वह विद्यार्थियों का एक स्नेही होता है।

अमेरिका के ग्रामीण स्कूलों का पाठ्य-क्रम

अब सुनिए उन ग्रामीण स्कूलों में पढ़ाया क्या जाता है। पढ़ना, लिखना, व्याकरण, अंकगणित, संयुक्तराज्य का इतिहास, वहाँ का भूगोल, वनस्पतियाँ, वहाँ के निवासियों के सम्बन्ध में मनुष्य के क्रम-विकास का इतिहास, चित्रकला आदि-आदि। अब दस्तकारी, खेती तथा गृहस्थी की बातें भी सिखाई जाती हैं। गृहस्थीसम्बन्धी बातें केवल लड़कियों को ही पढ़ाई जाती हैं। क्योंकि कुछ दिनों बाद राष्ट्र के निर्माण का भार इन्हीं के कंधों पर आ पड़ेगा। इन्हें भाँति-भाँति के भोजन बनाना, सीना-पिरोना तथा मकान की सजावट करने के ढंग सिखाये जाते हैं। लड़कों को कृषिसम्बन्धी सभी बातों की शिक्षा दी जाती है, जैसे भूमि ठीक करना, बीज बोना आदि-आदि।

हाथ के कामों में लड़कों को हाथ के औजारों से काम करने का अभ्यास कराया जाता है। खिड़कियाँ, दरवाजे, मेज, कुर्सी इत्यादि उनसे बनवाई जाती हैं और यह सारा काम आरम्भ से अन्त तक हाथ ही से किया जाता है।



विद्यार्थियों को कृषि की शिक्षा दी जा रही।

इस ढंग की शिक्षा का उद्देश्य यह है कि इस समय से एक किसान का लड़का अपने घर पर रहकर अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सके। इसके लिए यह आवश्यकीय है कि उसे लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त किसी खास दस्तकारी को जानना चाहिए।

चौधरी साहब—निःसन्देह यह बड़ा ही सुन्दर विचार है। हम भारतीयों को अवश्य ही इसका अनुकरण करना चाहिए। हाँ, यह तो बताइए कि इस भाँति की शिक्षा इन स्कूलों में कब तक दी जाती है।

डाक्टर साहब—इन स्कूलों में ६ वर्ष के बच्चों का नाम लिखा जाता है और वे आठ साल तक शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसके बाद अगर कोई उच्च शिक्षा ग्रहण करना चाहता है, तो वह हाई स्कूल में नाम लिखा ले सकता है। हाई स्कूल की शिक्षा चार साल की है। इसके बाद लड़का यूनिवर्सिटी में नाम लिखाकर चार वर्ष पढ़ने के बाद बी० ए० पास कर सकता है। इस भाँति यदि एक लड़का ६ साल की अवस्था में स्कूल में नाम लिखाता है तो वह २२ साल की अवस्था में बी० ए० पास कर सकता है, लेकिन वह हमारे यहाँ की बी० ए० की भाँति न होगा, जो पुस्तकों के कीड़े के सिवा और कुछ नहीं होते। वहाँ का बी० ए० जीवन की प्रत्येक दिशा में उन्नति कर सकता है।

स्त्रियों के द्वारा प्राइमरी स्कूलों की शिक्षा

चौधरी साहब—डाक्टर साहब ! अनुभव-द्वारा अब यह बात तो प्रमाणित हो ही चुकी है कि छोटे बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा कठिन है। मैंने सुना है कि अमेरिका में टीचरों की परीक्षा बड़ी ही कठिन होती है क्योंकि उनका विचार है कि शिक्षा का कार्य अयोग्य हाथों में सौंप देना हानिकारक है। मेरा विचार है कि प्रारम्भिक शिक्षा के लिए एक धुरन्धर पंडित के बजाय एक सभ्य और सुशील स्त्री अधिक सुयोग्य होती है।

डाक्टर साहब—आपका विचार बिलकुल ठीक है और इसी विचार से अमेरिका में प्रारम्भिक शिक्षा स्त्रियों के ही द्वारा दी जाती है। यह बिलकुल स्वाभाविक है क्योंकि छोटे बच्चों की देख-रेख स्त्रियाँ मर्दों की अपेक्षा अधिक सुचारु रूप से कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान शिक्षाप्रणाली में ऐसे ढंगों का संमिश्रण कर दिया गया है कि वह बड़ी आकर्षक हो गई है। अब आज तो जाता हूँ कल फिर वहाँ की प्रारम्भिक शिक्षा की कुछ विशेषतायें बताऊँगा।

दूसरे दिन डाक्टर साहब नित्य की भाँति टेनिस खेलकर चौधरी साहब की कोठी पर आये। चौधरी साहब ने नौकर को हाथ-मुँह धोने के लिए पानी लाने को कहा। डाक्टर साहब ने हाथ-मुँह धोया, एक प्याला चाय पी और आरामकुर्सी पर लेट गये।



प्रारम्भिक शिक्षा महिलाओं के द्वारा

डाक्टर साहब—कहिए श्रीमान् जी! क्या किसी छन्द का आनन्द ले रहे थे।

चौधरी साहब—जी हाँ। कवि कहता है—

जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

डाक्टर साहब—हाँ, यह छंद निस्सन्देह सुन्दर है।

मैं कल अमेरिका के ग्रामीण स्कूलों की चर्चा कर रहा था। अमेरिकानिवासियों और उनके स्कूलों को देखकर इन पंक्तियों की सार्थकता जीवित देख पड़ती है। स्वतन्त्रता की यह दशा है कि विद्यार्थियों को स्कूल घर-सा जान पड़ता है। स्वतन्त्रता का दूसरा प्रभाव साम्य है। वह इन विद्यार्थियों में देखते ही बनता है। एक विद्यार्थी के पिता की मासिक आय १०००) है; मगर यहाँ दोनों समान हैं। अध्यापिका की दृष्टि में इस बात का कोई अर्थ ही नहीं होता।

समता का एक उदाहरण

एक बार मैंने एक अध्यापिका जी से यह प्रश्न किया कि आपके स्कूल में सबसे धनी विद्यार्थी कौन है? उसने बहुत ही थोड़े शब्दों में यह कहा कि मुझे इसका बिलकुल ही ज्ञान नहीं। बहुत ही आग्रह करने पर उसने कहा:—

देखिए मुझे यह जानने ही की क्या आवश्यकता है कि कौन विद्यार्थी धनी है और कौन निर्धन। मैं तो केवल यह जानने का प्रयत्न करती हूँ कि कौन विद्यार्थी क्या क्या हो सकता है और यह वह मेरी संरक्षणता में पढ़कर प्रमाणित कर दे।

चौधरी साहब—हाँ, कल यही बात हुई थी कि अमेरिका में प्रारम्भिक शिक्षा औरतों ही द्वारा दी जाती है।

डाक्टर साहब—प्रारम्भिक शिक्षा ही क्यों, वरन् अमेरिका की अधिकांश शिक्षा का उत्तरदायित्व रिआया के ही हाथ में है। जिन लोगों को अमेरिका के ग्राम तथा क़स्बों में जाने का अवसर मिला है, वे इस बात को भली भाँति जानते हैं कि लड़कों की शिक्षा-सम्बन्धी सारी बातों में मातायें ही उत्तरदायी हैं। और यह बिलकुल स्वाभाविक भी है क्योंकि लड़के से पिता की अपेक्षा माता को अधिक ममता होती है। आप अमेरिका के एक साधारण से साधारण किसान से पूछिए कि तुम्हारा लड़का किस कक्षा में पढ़ता है, तो कदाचित् ही प्रतिशत एक मनुष्य इसका ठीक-ठीक उत्तर दे सके।

चौधरी साहब—अर्थात् उस आदमी को यह भी न ज्ञात होगा कि उसका लड़का किस कक्षा में पढ़ता है?

डाक्टर साहब—जी बिलकुल नहीं, वह बड़ी गम्भीरता से यह कह देगा कि मुझे तो ठीक पता नहीं, आप मेरी पत्नी

से पूछ लीजिए। वह आपको भली भाँति बता सकेगी।

एक कृषक-पत्नी का विद्या-प्रेम

एक बार मुझे एक कृषक की पत्नी से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ। उसकी आयु लगभग ५० साल के रही होगी। जब उसके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा के बारे में बातचीत आरम्भ हुई तो इसी सिलसिले में उसने बड़े ही शोकपूर्ण शब्दों में कहा—कि मुझे कालेज की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर ही न मिला। अगर अब भी मैं किसी कालेज में नाम लिखा सकती तो कितना अच्छा होता। विद्या प्राप्त करने के लिए आज भी मेरी आत्मा विकल रहती है। मुझे अपने खेतों के कारण ज़रा भी अवकाश नहीं मिलता, फिर मैं कुछ न कुछ समय पढ़ने के लिए अवश्य ही निकाल लेती हूँ। मैं अपने बच्चों के लिए भी अवकाश के दिनों में शिक्षा का प्रबन्ध करती हूँ। जिस समय वह यह बात कह रही थी, उस समय उसकी भावभंगियों से इस बात की सत्यता स्पष्ट प्रकट हो रही थी। इसके बाद वह वृद्धा हँसती हुई मुझे अपने रसोई-घर में ले गई और मुझे एक कुर्सी पर बिठलाकर बोली—देखिए यह खिड़की जो सामने लगी हुई है वह मेरे अध्ययन का स्थान है। मैं ज़रा-सा भी समय नष्ट नहीं जाने देती। जिस समय मैं आलू तथा दूसरी तरकारियाँ उबालने को रख

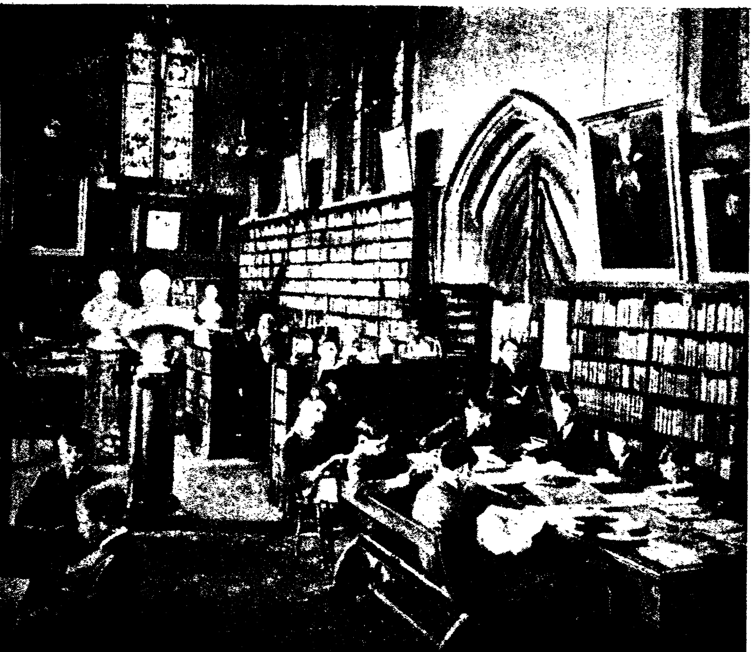
देती हूँ और जब तक वे उबलती हैं, मैं इतिहास का अध्ययन करती हूँ।

बच्चों के पुस्तकालय

चौधरी साहब—डाक्टर साहब! हमारे देश में बाल-साहित्य की बेहद कमी है और जो कुछ प्राप्त भी है वह बेतुका तथा अधूरा है। अगर हम चाहें भी कि किसी एक विषय पर बच्चों के लिए कुछ पुस्तकें मँगा लें, तो उनका मिलना बड़ा ही कठिन है। इसके अतिरिक्त धनी लोग तो किसी भाँति दो-एक पुस्तकें अपने बच्चों को ला ही देते हैं। मगर ग़रीब आदमी जिसे पाठ्य-पुस्तकें ही बड़ी कठिनता से खरीदने पर मिलती हैं, इधर-उधर की पुस्तकें कहाँ से खरीदें।

डाक्टर साहब—निस्सन्देह यह बड़ी ही कठिनता की बात है। हमारे देशवासियों तथा शिक्षा-विभाग को इस ओर ध्यान देना चाहिए। अमेरिका में इसी उद्देश को लेकर ही बच्चों के लिए पुस्तकालय खोल दिये गये हैं। उनमें अच्छी से अच्छी पुस्तकें मौजूद हैं। पुस्तकालयों को देखकर आप आश्चर्य्य में पड़ जायँगे। इन पुस्तकालयों में प्रत्येक विषय पर पुस्तकें मौजूद हैं।

चौधरी साहब—उन पुस्तकालयों के लिए धन कहाँ से आता है और वे किस भाँति स्थापित होते हैं।



बालकों का एक पुस्तकालय

डाक्टर साहब—इस काम के लिए बहुतेरे साधन हैं। कभी-कभी अध्यापिका जी तथा विद्यार्थीगण इसके लिए चन्दा माँग लाते हैं। इसके अतिरिक्त सरकार से भी सहायता मिल जाती है। कहीं-कहीं तो ऐसी प्रथा है कि यदि कोई अध्यापिका ३०) जमा कर ले, तो सरकार उसका दूना रुपया देकर पुस्तकालय खुलवा देती है। आशय यह है कि इस सम्बन्ध में केवल सरकार ही उत्तरदायी नहीं है। इसी बात में क्या वरन् प्रत्येक बात में वहाँ के निवासी बड़ी दिलचस्पी लेते हैं; क्योंकि सरकार वहाँ सहायक के रूप में है। मैं जब अमेरिका तथा योरप का मुक़ाबिला यहाँ से करता हूँ, तो यह समझता हूँ कि पुस्तकालयों की तो बात ही क्या, अभी तो यहाँ के लोगों में समाचार तथा पुस्तक पढ़ने के प्रति रुचि ही पैदा नहीं हुई है। आप ही बताइए कि आपके पास वकालत के अतिरिक्त और किस विषय की पुस्तकें हैं? आप तो सार्वजनिक कार्यों में भी योग देते हैं, मगर नेशनल हेराल्ड या पायनियर के सिवा आप कौन-सा समाचार-पत्र पढ़ते हैं। सम्भव है कि क्लब में एक-आध और समाचार-पत्र पर दृष्टि पड़ जाती हो। लेकिन समाचार-पत्र पढ़ना जिसे कहते हैं, वह तो नेशनल हेराल्ड तक ही सीमित है। क्षमा कीजिएगा यह बात केवल आप पर ही लागू नहीं है, वरन् सभी भारतीयों की यही दशा

है। आप एक-आध समाचार-पत्र तो पढ़ते ही हैं, बहुत-से तो यह अवसर भी नहीं पाते।

चौधरी साहब—यह बात आपकी अक्षरशः सत्य है। परन्तु सब समाचार-पत्र पढ़ने के लिए समय भी कहाँ है? और फिर दूसरे समाचार-पत्रों में और नई ही बात कौन-सी होगी?

डाक्टर साहब—यह अवश्य मानना पड़ता है कि अमेरिका-निवासी संसार में सबसे ज्यादा समाचार-पत्र पढ़ने-वाले होते हैं। वे चाहे एक बार भोजन करें मगर समाचार-पत्र अवश्य पढ़ेंगे। इसलिए वहाँ यह समझा जाता है कि जिस भाँति प्रत्येक मनुष्य शिक्षा प्राप्त करता है उसी भाँति वह अखबार अवश्य पढ़ता है। हर आदमी दो-तीन समाचार-पत्र अवश्य पढ़ता है। अमेरिकानिवासियों का समाचार-पत्र-प्रेम देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि यह इनके जीवन की कोई अत्यन्त अनिवार्य वस्तु है जिसके बिना वे अंधे, गूँगे और बहरे बन जावेंगे। हाँ! यह अवश्य है कि उनके यहाँ के समाचार-पत्रों में व्यक्तिगत वैमनस्य-सम्बन्धी लेख प्रकाशित नहीं होते।

ऐसा ज्ञात होता है कि यहाँ के समाचार-पत्रों के सम्पादक उस मिट्टी के बने हुए हैं, जिसको न किसी से व्यक्तिगत द्वेष है न प्रेम। सम्पादकों के नाम साधारणतया लोग नहीं जानते।

हाँ, कुछ सम्पादक अवश्य इतने प्रसिद्ध हैं कि उन्हें सभी लोग जानते हैं। वहाँ एक दैनिक समाचार-पत्र प्रतिदिन दो लाख छपता है।

चौधरी साहब—डाक्टर साहब क्षमा कीजिएगा। आप अमेरिका की हर वस्तु के इतने अधिक प्रशंसक हैं कि आपको उनको बुराइयाँ दिखाई ही नहीं पड़तीं। माना कि वहाँ के समाचार-पत्रों में व्यक्तिगत वैमनस्य की गंध नहीं आती, पर क्या उसमें ऐसे लेख प्रकाशित नहीं होते जिन्हें हमारे देशवासी पढ़ना भी पसंद न करेंगे ?

डाक्टर साहब—मेरे कहने का अर्थ यह कभी नहीं है कि अमेरिका दूध का धोया हुआ है। उसमें बहुत-सी त्रुटियाँ भी हैं और बहुत-सी अच्छाइयाँ भी। यह बात तो अमेरिका के लिए ही क्या वरन् सभी देशों और जातियों के सम्बन्ध में कही जा सकती है। बुराइयों के बारे में पहली बात तो यह है कि बहुत-सी बातें जो हमारी सभ्यता के विरुद्ध हैं और जिन्हें हम बुरा समझते हैं वे ही बातें उनकी सभ्यता के अनुकूल हैं। तो यह उनके लिए बुराइयाँ नहीं हैं। हाँ, वे बुराइयाँ निस्सन्देह बुराइयाँ हैं जो उनकी सभ्यता तथा धर्म के प्रतिकूल हों। खैर! कुछ भी हो, मेरे इस वार्त्तालाप का उद्देश यह नहीं है कि किसी देश या जाति की बुराइयों तथा अच्छाइयों का मुक़ाबिला किया जाय और

उस पर कोई निर्णय दिया जाय। मेरा उद्देश तो अमेरिका की विशेषताओं का वर्णन करके अपने देश की त्रुटियों पर भारतीयों का ध्यान आकर्षित करना है। अच्छाइयों और बुराइयों के सम्बन्ध में तो किसी कवि की एक कड़ी काफ़ी समझता हूँ—"स्वर्ग के निमित्त भी, रहने दो निर्णय कुछ आखिर वहाँ खाली किया भी क्या जायगा।" इससे मुझे इनकार नहीं कि प्राय: सम्पादक अपने उद्देश के लेखों और समाचारों में कुछ अधिक आकर्षण पैदा कर देते हैं। लेकिन इसमें भी जातीय स्वार्थ नहीं होता, वरन् यह भी सार्वजनिक स्वार्थ के लिए ही किया जाता है और यह ठीक भी है क्योंकि प्रत्येक समाचार-पत्र कुछ उद्देश लेकर आता है और उसी के प्रचार और पूर्त्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहता है। प्रजा के विचार सम्पादक की क़लम के इशारे पर चलते हैं। वह जिधर चाहे मोड़ दे।

इस भाँति पहले वाक्य ही में कौन, क्या, कब, क्यों और कहाँ की समस्यायें सुलझ जाती हैं। कभी-कभी शीर्षक से ही सारी घटना का पता चल जाता है। अमेरिकानिवासियों के निकट समय का मूल्य अधिक है, जैसा कि अभी कह चुका हूँ। इसलिए वे लोग घटना की एक-एक बात नहीं पढ़ते, वरन् घटना जान लेना ही काफ़ी समझते हैं। केवल वही घटनायें ब्यौरेवार पढ़ी जाती हैं जिनका महत्त्व कुछ विशेष होता है।

हमारे हिन्दी-समाचार-पत्र ऐसी घटनाओं को आश्चर्यजनक कहते हैं। आवश्यकता मनुष्य को अपने अनुसार बना ही लेती है। यही कारण है कि अमेरिकानिवासी भी इस ढंग से समाचार पढ़ने के अभ्यस्त हो गये। वे अधिकतर शीर्षक पढ़कर ही घटना के बारे में समझ जाते हैं।

प्रचारणीय समाचार

प्रचारणीय समाचारों का चयन भी एक कला है, जो अनुभव से ही प्राप्त होती है। यहाँ के सम्पादक असाधारण समाचारों को ही समाचार समझते हैं। अगर एक कुत्ते ने किसी आदमी को काट खाया तो इनके निकट यह समाचार नहीं है वरन् यदि आदमी किसी कुत्ते को काट खाता है, तो इसे वे लोग समाचार कहते हैं। इस पर नन्दकिशोर को बड़े जोर की हँसी आगई, डाक्टर साहब भी हँस पड़े।

डाक्टर साहब—समाचार का वह पृष्ठ सबसे अधिक आकर्षक समझा जाता है, जिसमें केवल समाचार ही समाचार प्रकाशित होते हैं। जिस प्रकार दूकानदार अपनी अच्छी-अच्छी वस्तुओं को सामनेवाली आलमारी में सजाकर रखता है उसी भाँति सम्पादक भी पहले पृष्ठ पर नई-नई खबरें छापता है।

समाचार-पत्रों के संवाददाता

अमेरिका के समाचार-पत्र जिस भाँति और दृष्टियों से पूर्ण हैं उसी भाँति संवाददाताओं की भी एक बहुत बड़ी तथा

नियमित सभा है। वे लोग या तो मासिक वेतन पाते हैं या समाचारों के अनुसार पारिश्रमिक पाते हैं। वे संवाददाता केवल अमेरिका की देहातों और नगरों ही में नहीं वरन् सारे संसार में फैले हुए हैं। स्थानीय संवाददाताओं के पास इतना अधिक काम रहता है कि उनको दम मारने की भी फुरसत नहीं मिलती। जिन लेखों को वे लोग लिखते हैं उनको सुधारने या दोहराने का समय उन्हें नहीं मिलता। इनके सामने टाइपराइटर रक्खे रहते हैं और वे लोग इतनी शीघ्रता से टाइप करते हैं कि उनकी उँगलियों की चाल कठिनता से ही दिखाई देती है। पास में ही कम्पोज़ीटर खड़ा रहता है जो टाइप किये हुए पन्नों को छीनता-सा जान पड़ता है। ऐसी दशा में भला सुधारने तथा दोहराने का समय कहाँ मिल सकता है।

समाचार-पत्रों के कार्यालय

समाचार-पत्रों के कार्यालय के सम्बन्ध में एक संरक्षण-विभाग भी रहता है। इसमें समाचारों के संदर्भ के लिए ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा साहित्यक लेखों का संग्रह होता है जो दूसरे-दूसरे पत्रों, साप्ताहिकों आदि में प्रकाशित हो चुके हैं। ये इस ढंग से रक्खे जाते हैं कि उनको ढूँढ़ने में अधिक समय न लगने पावे। इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े पुरुषों के जीवन-चरित्र, उनकी तसवीरें तथा प्रसिद्ध-प्रसिद्ध

इमारतों के दृश्य भी संगृहीत होते हैं। इस संग्रह का आशय यह है कि किसी भी लेख में उचित संदर्भ शीघ्र से शीघ्र दिया जा सके। यदि योरप का कोई राजा, जापान का कोई राजनीतज्ञ तथा अमेरिका का कोई विद्वान् मर जाता है, तो इस संग्रह की सहायता से कुछ ही क्षण में उस महापुरुष के जीवन-चरित्र तथा चित्र प्रकाशित हो जावेगा।

चौधरी साहब—निस्सन्देह सम्पादन-कला की उन्नति की यह चरम सीमा है।

अमेरिका के सचित्र समाचार-पत्र

नन्दकिशोर—डाक्टर साहब! मैंने सुना है कि अमेरिका के समाचार-पत्रों में चित्रों की अधिकता रहती है।

डाक्टर साहब—हाँ, अमेरिका के समाचार-पत्रों में बहुत-से चित्र होते हैं। वहाँ के प्रत्येक समाचार-पत्र के कार्यालय में फ़ोटोग्राफ़र होते हैं। फिलाडेलफिया के एक समाचार-पत्र के कार्यालय में एक फ़ोटोग्राफ़र पेट्रोल है।

नन्दकिशोर—यह फ़ोटोग्राफ़र पेट्रोल क्या है?

डाक्टर साहब—फ़ोटोग्राफ़र पेट्रोल एक फ़ोटो लेने का बड़ा भारी कैमरा होता है, इसे सारे शहर में घुमाया जाता है। यह इतना लम्बा-चौड़ा होता है कि अच्छा ख़ासा एक कमरा समझ लो। इसे नगर में घुमाते फिरते हैं ताकि जो कुछ नगर में हो रहा है उसकी प्रतिच्छाया

इसमें आ जावे। इससे जो चित्र तैयार होते हैं, वे समाचार-पत्रों में छपने के लिए दे दिये जाते हैं। इस भाँति नगर के कोने-कोने में जो कुछ हो रहा है वह सब समाचार-पत्र देखने से पता चल जाता है। चित्रों-द्वारा समाचार बताने का कितना अच्छा ढंग है।

अमेरिका के संडे एडीशन

अमेरिका में संडे एडीशन का बड़ा महत्त्व है। इसमें केवल सम्पादकीय लेख तथा देश-विदेश के समाचार ही नहीं छपते वरन् चित्रों की भी अधिकता रहती है।

Sunday Edition सात या आठ प्रकरणों में विभाजित होता है। प्रत्येक प्रकरण ४ पृष्ठ से लेकर १६ पृष्ठों तक का होता है।

एक प्रकरण में साधारण समाचार, दूसरे में व्यायाम-सम्बन्धी बातें, तीसरे में गृहस्थी-सम्बन्धी, चौथे में समाज तथा वेश-भूषा पर टिप्पणियाँ, पाँचवें में साहित्य-सम्बन्धी चर्चा छठे में व्यंगचित्र तथा हास्य-विनोद और सातवें में विज्ञापन इत्यादि। कुछ संडे एडीशनों के साथ एक मैगज़ीन भी निकलता है, जिसमें अमेरिका के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध लेखकों की कृतियाँ संगृहीत होती हैं। संडे एडीशन के चित्रों में संसार की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध इमारतें, मनोहारी दृश्य, संसार के श्रेष्ठ चित्र प्रकाशित होते हैं। कुछ चित्र तो इतने सुन्दर होते हैं कि लोग उन्हें बड़ी सावधानी से रखते हैं।

१½ सेर वज़न का समाचार-पत्र

चौधरी साहब—पता यह चला कि वहाँ पत्र बड़े भारी होते हैं।

डाक्टर साहब—आप उनके पृष्ठों की संख्या के बारे में कहते हैं। वहाँ का दैनिक पत्र १८ सफे तक का होता है। इन दैनिक पत्रों का संडे एडीशन ६० पृष्ठों से कम नहीं होता। एक बार मुझे शिकागो के डेली ट्रीब्यून का संडे एडीशन देखने का अवसर मिला। यह अब्राहम लिंकन की स्मृति में निकाला गया था।

नन्दकिशोर—वही अब्राहम लिंकन जिसने अमेरिका में दास-प्रथा का विरोध बड़े जोर-शोर से किया था।

डाक्टर साहब—हाँ-हाँ, वही अब्राहम लिंकन।

नन्दकिशोर—तो उसी की स्मृति में वह पत्र प्रकाशित हुआ था?

डाक्टर साहब—हाँ, उसी की वर्षी के अवसर पर।

नन्दकिशोर—तो फिर क्या हुआ, वह कैसा था?

डाक्टर साहब—हो हाँ, उस समाचार-पत्र का यह विशेषांक था। यह १६४ पृष्ठ का था।

नन्दकिशोर—समाचार-पत्र क्या, यह कहिए कि यह एक अच्छी पूरी पुस्तक थी।

डाक्टर साहब—अभी तुमने उसके पृष्ठ की संख्या ही तो सुनी है, यदि वज़न सुनो तो बड़ा ही आश्चर्य होगा। उसकी तोल लगभग १½ सेर के थी।

रैकेट लिये हुए डाक्टर साहब दूर से दिखाई दिये। नन्दकिशोर ने प्रसन्न होकर पिता जी से उनके आने की सूचना दी।

चौधरी साहब—देखो नौकर को बुलाकर पानी इत्यादि लाने को कह दो। तुम अन्दर जाकर अपने चाचा जी से कहो कि जलखवा और पान भिजवा दें। नन्दकिशोर भागता हुआ अन्दर पहुँचा तब तक नौकर पानी और तौलिया लेकर आगया। डाक्टर साहब ने आते ही चौधरी साहब से हाथ मिलाया और नन्दकिशोर को पूछा। इसी समय नन्दकिशोर एक नौकर से चाय तथा जलखवा लिवाये हुए आ पहुँचा। डाक्टर साहब ने नन्दकिशोर को अपने पास बुलाकर बिठलाया। जलखवा खाया और बातचीत आरम्भ हो गई।

चौधरी साहब—डाक्टर साहब! कभी आपको अमेरिका के गाँवों में भी जाने का अवसर हुआ है?

डाक्टर साहब—जी हाँ, कई बार, प्रायः परिव्राजक लोग जो विदेशों में भ्रमण के लिए जाते हैं, अधिकांश लोग बड़े-बड़े नगरों को ही देखकर अपना मत प्रकट कर देते हैं। कुछ भारतीय परिव्राजक अमेरिका के सम्बन्ध में इसी भाँति लेख प्रकाशित करा देते हैं। सत्य तो यह है कि अमेरिका का असली रूप बड़ी-बड़ी शानदार

इमारतों तथा नगरों की भड़कीली रहन-सहन में नहीं दिखाई देता। वरन् इसका सच्चा रूप देहात ही में दिखाई देता है। इसी कारण मैं गर्मियों की छुट्टियों में अमेरिका के गाँवों का जीवन देखने के लिए गया था।

अमेरिकानिवासियों का ग्राम्य जीवन

उनके जीवन की पहली विशेषता यह है कि वे बड़े स्वतंत्रता-प्रेमी तथा सीधे-सादे हैं। थोड़ी ही देर की मेल-मुलाक़ात में वे अपने-से जान पड़ते हैं। भ्रमण में भली भाँति परिचय देने का अवसर कहाँ मिलता है। लेकिन वे इस परिचय के लिए अधिक ध्यान नहीं देते, और न भारतीय की भाँति अपना मुँह फुलाये हुए चुपचाप बैठे रहते हैं। मुझे गाड़ी में बैठे हुए अभी दो ही चार मिनट व्यतीत हुए होंगे कि कई सज्जनों से घनिष्ठता हो गई और चिरपरिचितों की भाँति बातचीत होने लगी। बातें भी सभी विषय पर होती थीं, हत्यायें, ब्याह, तलाक़, असामयिक घटनायें आदि-आदि, और मज़ा कि गाड़ी में कोई भी ऐसा आदमी न था कि जो इस बातचीत में थोड़ा-बहुत भाग न लेता हो। मेरे निकट ही एक वृद्ध सज्जन विराजमान थे और उन्होंने मेरी यात्रा का उद्देश्य यह समझा था कि मैं उस भयानक स्त्री को देखने के लिए जा रहा हूँ, जिसने लगभग १२ आदमियों की हत्या करा डाली थी। उन्होंने मुझसे पूछा, क्या आप उसी स्त्री को देखने जा रहे हैं? जब मैंने इस बात से इनकार

किया तो बोले, कि उसे देखने के लिए सैकड़ों आदमी चले जा रहे हैं। स्पेशल गाड़ियाँ छूट रही हैं, वहाँ तो एक मेला-सा लगा हुआ है। इस पर भी मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया। इस पर क्या देखता हूँ कि आप उदास होकर मुँह लटकाये बैठे हुए हैं।

चौधरी साहब—(इस पर बड़े जोर से हँस पड़े) अच्छा, फिर क्या हुआ ?

डाक्टर साहब—अब मैं उस स्टेशन पर उतर पड़ा जहाँ मुझे जाना था। सहसा स्टेशनमास्टर या टिकटकलेक्टर जो भी समझिए आगये। आपने बड़े ठाठ से बातचीत आरम्भ कर दी। थोड़ी ही देर में वे भी बड़े भारी मित्र हो गये। मुस्कराते-मुस्कराते अपने उस स्थान के बारे में छोटी-बड़ी सभी बातें सुना दीं। उदाहरण के लिए वह नगर कितना बड़ा है, उसकी जन-संख्या कितनी है ? मुहल्लों और सड़कों के नाम कैसे हैं ? कितने स्कूल हैं ? इतना ही नहीं वरन् स्कूल-मास्टरों के क्या-क्या नाम हैं। इस भाँति वहाँ के सम्बन्ध में मुझे एक अच्छा खासी जानकारी प्राप्त हो गई।

चौधरी साहब—डाक्टर साहब—आप तो देहात के सम्बन्ध में बता रहे थे, मगर अभी तो आपने नगर शब्द का प्रयोग किया है ?

डाक्टर साहब—मैं स्वयं ही इस बात की व्याख्या करनेवाला था। बात यह है कि अमेरिका में नगर का अर्थ केवल यही नहीं है कि वह कोई बड़ा स्थान हो, वरन हर एक स्थान के लिए वे लोग इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण के लिए समझ लो कि एक स्थान है, जिसे 'लिबरटी' कहते हैं। यह एक गाँव है, जो शिकागो से थोड़ी ही दूर पर स्थित है। इसमें अधिक-से-अधिक १०० आदमी बसते होंगे लेकिन यह भी नगर कहा जावेगा। यहाँ छोटे-छोटे टीलों को पहाड़ियाँ और साधारण से नालों को नदियाँ कहते हैं। गन्दे नाले झरने कहलाते हैं और छोटे गाँव नगर कहे जाते हैं।

नन्दकिशोर—वाह! यह तो ख़ूब रही।

डाक्टर साहब—अभी और तो सुनिए। एक बार मैं इसी भाँति के एक नगर में पहुँचा, जिसमें तीन पुरुष और दो स्त्रियाँ रहती थीं। एक बनिये की दूकान और रेल का छोटा-सा स्टेशन, एक काली बिल्ली और एक पीला कुत्ता था। लेकिन यह भी नगर था।

इन गाँवों और क़स्बों की एक विशेषता यह है कि यहाँ के निवासी हाल-चाल जानने के बड़े ही उत्सुक होते हैं। जिसे देखिए एक प्रश्नसूचक वाक्य सोचे हुए खड़ा है। मैं यदि कहीं एक बार कुछ पूछना चाहता तो शीघ्र ही वहाँ पर एक भीड़-सी लग जाती।

जिस भाँति मिट्टी के बरतनों को लोग घुमा-घुमाकर देखते हैं उसी भाँति मुझे भी लोग आगे पीछे और इधर-उधर से देखते और प्रश्नों की झड़ी लगा देते। चार प्रश्न तो ऐसे हैं जो अमेरिकानिवासी विदेशियों से करते हैं।

(१) आप किस देश के निवासी हैं ?

(२) यहाँ आये हुए आपको कितने दिन हुए ?

(३) आपकी अवस्था क्या है ?

(४) क्या आप हमारे देश को अपने देश की अपेक्षा अच्छा समझते हैं ?

जिस भाँति मनहरन छन्द का चौथा चरण पढ़ने से पूरे छन्द का अर्थ स्पष्ट हो जाता है, उसी भाँति उनके चौथे प्रश्न से साफ पता लग जाता है कि उनका असली मतलब क्या है। अर्थात् वे लोग यह जानना चाहते हैं कि हमारा देश तुम्हारे देश से सुन्दर है।

चौधरी साहब—इस बात पर खिलखिलाकर हँस पड़े।

डाक्टर साहब कहते गये।

डाक्टर साहब—एक बार मुझे एक निमंत्रण में सम्मिलित होने का अवसर मिला। निमंत्रण देनेवाले ने मेरा एक दूसरे सज्जन से परिचय करा दिया। उन्होंने लोकाचार के नाते मेरा शुभ नाम तथा शुभ स्थान जानने के पश्चात् अपने मतलब की बात इस भाँति आरम्भ की।

सज्जन—आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अमेरिका एक बड़ा ही शानदार देश है।

मैं जान गया कि अब किस भाँति की बातचीत आरम्भ होनेवाली है।

सज्जन—यह ईश्वर का अपना देश है। यह संसार का स्वर्ग है। मैं इस पर भी चुप रहा। मेरी इस चुप्पी ने उसके दिल में एक हलचल पैदा कर दी और अब बड़े ठाट के साथ अपने देश की प्रशंसा करना आरम्भ कर दिया।

सज्जन—हम लोग संसार के प्रकाश हैं। हम लोग इस भूमि के सौन्दर्य्य हैं। हमने इँगलेंड को नीचा दिखाया है, हम लोग किसी से भी नहीं डरते। हम अमेरिका-निवासी हैं। डाक्टर साहब ने इसे इस ढंग से कहा कि सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े।

चौधरी साहब—इस आत्म-श्लाघा की कोई सीमा भी है।

डाक्टर साहब—इसमें श्लाघा का इतना पुट नहीं है, यह उनका देश-प्रेम है, उन्हें अपने देश पर अभिमान है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि अमेरिकानिवासी कुछ सीमा तक अपने देश की झूठी बड़ाई भी करते हैं। साधारण-सा 'अधिक' शब्द कहकर उनको सन्तोष नहीं होता, वे 'अधिक' को अधिकतम कहेंगे और अच्छे को जब तक सबसे अच्छा न कह लेंगे उन्हें चैन न पड़ेगी। वे

अपने देश की हर चीज़ को उस शीशे में देखते हैं, जिसमें हर चीज़ बड़ी दिखाई देती है।

एक अमेरिकन सज्जन ने एक साधारण-सा इटों का बना हुआ गिरजाघर दिखाकर कहा कि यह सारे देश में सबसे बड़ा गिरजाघर है। मुझे यह सुनकर कुछ आश्चर्य्य नहीं हुआ क्योंकि मैं समझता था कि वह इसे सारी दुनिया के गिरजों से बड़ा कहेगा। डाक्टर साहब की इस बात पर भी सभी थोड़ी देर तक हँसते रहे।

डाक्टर साहब—लेकिन अमेरिकानिवासियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे लोग सादगी और स्वच्छता के बड़े ही प्रेमी हैं। दूसरी जातियों की भाँति उन्हें अपनी सभ्यता और बड़प्पन पर ज़रा भी घमंड नहीं है। प्रायः वे ऐसी बातें करने लगते हैं कि अगर तुम उनके स्वभाव से परिचित न हो तो तुम्हें बुरा लग जावे। इन गुणों के साथ ही साथ उनमें जानने की इच्छा इतनी प्रबल है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। अगर किसी अमेरिकन से आपकी जाना पहचान हो जावे तो वह आपकी छोटी-से-छोटी बात में भी अपनी राय दिये बिना न मानेगा। उदाहरण के लिए वह आपके दाँतों की चमक, बालों का रंग, आपके कपड़ों का मूल्य आदि के सम्बन्ध में निःसङ्कोच टीका-टिप्पणी करेगा। इतना ही नहीं, वह आपके जेब से घड़ी निकालकर उसकी चेन

के वजन का अनुमान करने में भी ज़रा न हिचकेगा। वह बड़ी आज़ादी के साथ उस चेन का मूल्य भी आपसे पूछ लेगा।

चौधरी साहब—इस भाँति की सादगी और निःसंकोच में कोई बुराई तो दिखाई नहीं देती, यह तो उनका भोलापन है।

डाक्टर साहब—मैंने भी इसे बुरा समझकर नहीं कहा है। पर इस सादगी के कारण उनमें कुछ त्रुटियाँ आगई हैं, वे निस्सन्देह बुरी हैं। आश्चर्य्य तो यह है कि पढ़े-लिखे होने पर भी वे अपनी इन कमियों को सुधारना नहीं चाहते।

अमेरिकानिवासियों का अंधविश्वास

चौधरी साहब—क्या? यह तो निस्सन्देह आश्चर्य की बात है कि उनके पढ़े-लिखे होने पर भी अंधविश्वास अपना घर बनाये बैठा है

डाक्टर साहब—क्या आप यह समझते हैं कि मनुष्य लिख-पढ़ जाने पर बिलकुल अंधविश्वासी नहीं रहता?

चौधरी साहब—समझा यही जाता है, मगर यह तो बताइए कि वे कौन-सी बातें हैं जिनके लिए अमेरिकन अंध-विश्वासी कहे जाते हैं।

डाक्टर साहब—ख़ैर! इस समय मैं अंधविश्वास के औचित्य

तथा अनौचित्य पर बहस करना नहीं चाहता। मैं केवल कुछ घटनायें आपको सुनाता हूँ।

(१) अमेरिकानिवासियों का विश्वास है कि यदि सोमवार को वर्षा होती है, तो उस सप्ताह में ३ दिन और वर्षा होगी।

(२) यदि ईस्टर के दिनों में वर्षा होती है, तो बराबर एक सप्ताह तक वर्षा होती रहेगी।

(३) यदि काली बिल्ली रास्ता काट जाती है तो यह अपशकुन समझा जाता है।

(४) यदि खरगोश आपके दाहनी ओर से निकल जाता है, तो यह शुभ शकुन और यदि वह बायीं ओर से जाता है तो अपशकुन समझा जाता है।

(५) चन्द्रमा की ओर इंगित करना अभाग्य का लक्षण समझा जाता है।

(६) यदि सातवें दिन चन्द्रमा दिखाई देता है, तो हवा चलने का लक्षण समझा जाता है।

चौधरी साहब—मैं यह समझता था कि यह अंधविश्वास हम कुपढ़ भारतीयों में ही अपना राज्य स्थापित किये हुए है, मगर पता यह चला कि यह अमेरिका ऐसे पढ़े-लिखे और स्वतंत्र देश में भी अपनी धाक जमाये हुए है।

डाक्टर साहब—परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वे लोग बड़े ही मिलनसार तथा विनम्र हैं। जो कुछ सेवायें आपकी

करने योग्य हैं उसे वे बिना अहमान किये करने को तैयार रहते हैं। आप इस बात से स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि एक मध्यम श्रेणी का किसान भी वहाँ बहुत ही कम पैदल चलता है। या तो वह घोड़े पर सवार होता है या मोटर पर। उन लोगों के लिए पैदल चलना बड़ा ही दुखदाई है। मैं केवल एक ही दिन इस गाँव में ठहरा था और इतने थोड़े समय में ही वहाँवालों ने मुझे गाड़ी में बिठाने का भरसक प्रयत्न किया मगर मैंने धन्यवाद देकर इनकार कर दिया। जब एक किसान किसी को पैदल-चलते हुए देखता है तो वह उससे पूछता है कि आप कहाँ जावेंगे? मान, लो वह कहता है कि मैं एक यात्री हूँ और मुझे बड़ी जल्दी है। वह किसान उत्तर देगा कि आप मेरी गाड़ी में बैठ लीजिए। यात्री यदि धन्यवाद देने के बाद इनकार कर गया तो वह किसान कहेगा कि आपको इसका किराया नहीं देना होगा। मैं आपको यों ही जहाँ कहिएगा उतार दूँगा।

चौधरी साहब—तो यह कहिए कि वे लोग बड़े ही मिलनसार हैं। लेकिन घोड़ा-गाड़ी और मोटर से यह अनुमान होता है कि वे लोग हमारे भारतवर्ष के किसानों की भाँति निर्धन नहीं हैं। अच्छा, उनके घरों की क्या दशा है?

डाक्टर साहब—एक मध्यम श्रेणी के किसान का घर प्रायः दो-मंजिला होता है। यह ईंटों का बना हुआ नहीं होता,

वरन् लकड़ी का बना होता है। प्रत्येक घर के सामने एक छोटी-सी वाटिका होती है, जिसमें अधिकतर अंगूर की बेलें फैली होती हैं। घर में एक बरामदा, एक द्वार, भोजनालय, एक भोजन करने का कमरा तथा ३-४ रहने के कमरे होते हैं। ये कमरे बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से सजे हुए होते हैं। प्रत्येक वस्तु स्वच्छ दिखाई देती है। अमेरिकन स्त्रियों को पूर्वी क़ालीन पर उसी भाँति गर्व है जिस भाँति पैरिस की स्त्रियों को गाउन और फूल-फलों की टोकरियों पर है। पूर्वी क़ालीनों का शौक़ नगर से लेकर गाँवों तक में एक-सा ही है। अमेरिकन किसान की पत्नी पूर्वी क़ालीन अपने कमरे में बिछा हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न होती है। इस कमरे में सेण्ट मरोना और मरेलों के चित्र सुन्दर ढंग से लगे होते हैं। अलमारियों में पुस्तकें और मेज़ों पर समाचार-पत्र दिखाई देते हैं। एक ओर प्यानों और कोच इत्यादि ढंग से रक्खे होते हैं।

नन्दकिशोर—डाक्टर साहब! आप कहते हैं कि अमेरिका के किसानों के घर ईंटों के बजाय लकड़ी के बने हुए होते हैं। भला लकड़ी का मकान कैसा होता होगा?

डाक्टर साहब—लकड़ी का घर ठीक ईंटों की ही भाँति होता है। अभी तुमने उस भाँति के घर देखे नहीं हैं इस कारण समझ में नहीं आता। सुनो! मैं तुम्हें बताता



एक किसान का मकान

हूँ। तुमने रेल के पहले और दूसरे दर्जे के डिब्बे तो देखे ही होंगे, बस इसी से मिलते-जुलते घर होते हैं।

नन्दकिशोर—इस भाँति के लकड़ी के घर तो बड़े ही विचित्र होते होंगे।

चलते-फिरते मकान

डाक्टर साहब—उन मकानों के सम्बन्ध में सबसे अधिक विचित्र बात यह है कि उनको आप जहाँ चाहें ले जा सकते हैं।

चौधरी साहब—हमारे यहाँ के मकान स्थावर सम्पत्ति कहलाते हैं। लेकिन यदि अमेरिका के मकान जहाँ चाहें ले जाये जा सकते हैं तो उनकी गणना अस्थावर सम्पत्ति में होना चाहिए।

डाक्टर साहब—(हँसकर) इसमें सन्देह ही क्या।

नन्दकिशोर—अच्छा! वे मकान तो बड़े बोझिल होते होंगे? उसे किस भाँति एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते होंगे?

डाक्टर साहब—उन मकानों में पहिये लगे होते हैं, इस कारण वे बड़ी ही सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाये जा सकते हैं।

अमेरिका के किसान

चौधरी साहब—आशय यह कि अमेरिका के किसान का जीवन बड़ा ही सुखी है।

डाक्टर साहब—आप उनका अतिथि-सत्कार तथा मिलनसारी का अनुमान इस बात से भली भाँति कर सकते हो कि एक गाँव के किसान ने मुझसे यह कहा था कि आप बिना किसी हिचकिचाहट के मेरे खेत पर चले आया कीजिए और बिना मूल्य तरबूज ले जाया कीजिए। यह तो उन किसानों की मिलनसारी के उदाहरण हैं। शारीरिक दृष्टिकोण से भी वहाँ के किसान बहुत परिश्रमी तथा बलवान् हैं। अमेरिका का सारा वैभव उन लोगों के परिश्रम का ही फल है। कृषि-प्रधान देशों की उन्नति तथा अवनति किसानों पर ही अवलम्बित है। मगर अमेरिका को इससे किंचित्मात्र भी भय नहीं है क्योंकि अमेरिका के किसान सुखी और स्वस्थ हैं। आप जब यह सुनेंगे कि अमेरिका का किसान कितना काम करता है तो आपको बड़ा ही अचम्भा होगा। वहाँ का किसान ठीक चार बजे प्रातःकाल उठता है और गाय दुहकर घोड़ों का साज-सामान ठीक करके अपने जानवरों का दाना-चारा देता है। फिर पानी पीकर अपने काम पर चला जाता है। खेत पर दोपहर तक काम करता है। एक घंटे आराम तथा भोजन करने में व्यय करता है और फिर १ बजे से काम में लग जाता है और बराबर संध्या तक करता रहता है। काम में इतना रत होने

पर भी वहाँ के किसानों मे संसार की नई-नई. घटनायें एक भी छिपी नहीं रहती हैं। क्योंकि हर एक किसान दो या तीन दैनिक समाचार-पत्र, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र अवश्य पढ़ता है।

चौधरी साहब—मेरा विचार है कि उन लोगों के कुछ अपने समाचार-पत्र भी निकलते होगें ?

डाक्टर साहब—हाँ; हाँ किसानों के भी समाचार-पत्र निकलते हैं। उनके "ड्रोवरस जरनल" तथा "वैलेसेसफ़ारमर" काफी प्रसिद्ध हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सात-आठ किसान मिलकर एक समाचार-पत्र-गोष्ठी स्थापित कर लेते हैं। प्रत्येक सभासद् को कम से कम ३) वार्षिक देना पड़ता है और प्रत्येक सप्ताह में हर एक सभासद् को ३, ४ पत्र अवश्य देखने को मिल जाते हैं। वे लोग अवकाश के समय में इन्हें पढ़ते हैं।

चौधरी साहब—ये बातें हम भारतीयों के लिए कितनी शिक्षा-प्रद हैं। आप अमेरिका के किसानों की बातें करते हैं और हमारे यहाँ के पढ़े-लिखे सभ्य नागरिकों को भी ये सुविधायें प्राप्त नहीं हैं।

डाक्टर साहब—आपको इतने पर ही आश्चर्य्य है, अरे उन ग्राम्यवासियों में विद्या के प्रति बड़ा ही अनुराग है। ऊपर मैं समाचार-पत्र-गोष्ठी के सम्बन्ध में बता चुका हूँ। इसी भाँति की गोष्ठियों के सभासद् हर पन्द्रहवें

दिन एक स्थान पर एकत्रित होते हैं, और अपने जीवन तथा राष्ट्र की उन्नति के साधनों पर शास्त्रार्थ करते हैं और फिर इन साधनों को कार्य्यरूप में परिणत करते हैं। कोई किसान भूमि के उपजाऊ बनाने के साधन पर लेख पढ़ता है, कोई स्त्री गृहस्थी-सम्बन्धी बातों पर भाषण देती है। इसके बाद चाय-पानी पीकर यह मित्र-गोष्ठी समाप्त होती है।

नन्दकिशोर—हमारे यहाँ के किसानों तथा अमेरिका के किसानों में कितना अधिक अन्तर है। जिन बातों का चित्र आपने वहाँ के किसानों का खींचा है, वह हमारे नागरिकों में ढूँढ़े से भी नहीं मिल सकता।

चौधरी साहब—सत्य तो यह है कि ये सब बातें ज़िन्दादिली पर अवलम्बित हैं और इस जीवनस्फूर्ति की जननी है स्वतत्रंता तथा उदारता। हमारे यहाँ के किसानों की तो बात ही क्या। स्वतंत्रता तथा उदारता हमारे यहाँ के बड़े-से-बड़े आदमी को प्राप्य नहीं है।

डाक्टर साहब—चौधरी साहब! यह विचार आपका बिलकुल ठीक है।

चौधरी साहब—इसी के साथ, मेरा विचार है कि उदारता और स्वतंत्रता, कर्त्तव्यपरायणता तथा उचित कार्य-प्रणाली पर अवलम्बित है। आपने अब तक जो बातें अमेरिका के किसानों के सम्बन्ध में सुनाई हैं

उनसे साफ़ प्रकट होता है कि ये सब सुविधायें उनके नियमित जीवन का फल है। हर काम के लिए समय नियत है। परिश्रम तो उनकी अपनी ही चीज़ है। किसानों के जीवन-सम्बन्धी जो बातें आपने बताई हैं वे इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि किसी का परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता। हम लोग कामचोर हैं, परिश्रम करना पाप-सा समझते हैं, आलस्य और लापरवाही हम लोगों में कूट-कूट कर भरी हुई है। यही कारण है कि हम लोग निर्धन और दुखी हैं, कभी भी सच्चे आनन्द का दर्शन नहीं कर पाते।

डाक्टर साहब—सच्चा आनन्द और ज़िन्दादिली का मूल्य अमेरिकानिवासियों और वहाँ के किसानों को भली भाँति ज्ञात है। वे इतने अधिक मिलनसार और आमोद-प्रमोद-प्रिय हैं कि शायद ही संसार की दूसरी जाति इनका मुक़ाबिला कर सके। मेले-ठेले और मछली का शिकार आदि इसी लिए बनाये गये हैं कि ये आपस में मिल-जुलकर अपने प्रेम-भाव को बढ़ाते रहें। गर्मी की चाँदनी रातों में, मैदानों की खुली हुई हवा में युवक लोग सहभोज आदि का प्रबन्ध इसी प्रेरणा से करते हैं कि आमोद-प्रमोद के साथ पारस्परिक भ्रातृ-भाव की वृद्धि हो।

हेलनकिलर

संध्या को जब नित्य की भाँति डाक्टर साहब पधारे तो कुन्ती के चाचा जी ने कहा—डाक्टर साहब कुन्ती की इच्छा है कि आप अमेरिका की कोई विचित्र बातें सुनायें जो स्वयं आपने देखी हों।

डाक्टर साहब ने कुन्ती को अपने पास बुलाया और कहा- लो! सुनो, मैं तुम्हें एक ऐसी विचित्र बात सुनाता हूँ जिसे सुन-कर तुम अचम्भे में पड़ जाओगी। एक लड़की है जिसका नाम 'हेलनकिलर' है। वह अन्धी, गूँगी और बहरी थी, मगर अब वह बोलती, देखती और सुनती है।

कुन्ती—क्या वह दवा से अच्छी हो गई?

डाक्टर साहब—नहीं वह अब भी अन्धी है और बहरी है लेकिन वह इतनी कुशाग्रबुद्धि है कि उसने केवल मामूली तौर से पढ़ना-लिखना ही नहीं सीख लिया वरन् अमेरिका के विश्वविद्यालय से बी० ए० की उपाधि प्राप्त कर ली है।

कुन्ती—जब वह अंधी और बहरी है तो उसने अक्षर की बनावट तथा उसका उच्चारण कैसे समझ लिया? डाक्टर साहब आप उसका सारा हाल मुझे सुनाइए?

डाक्टर साहब—हेलनकिलर सन् १८८० ई० में पैदा हुई थी। उसके कुटुम्बियों में एक आदमी ऐसा था जो बहरों को शिक्षा देने में बड़ा ही निपुण था। उसका पिता आर्थर एच०

किलर एक समाचार-पत्र का सम्पादक था। हेलन जन्म से ही अंधी, गूँगी और बहरी न थी। बचपन में वह साधारण बच्चों की ही भाँति थी। लेकिन जब वह साल-सवा साल की हुई तो एक बीमारी के कारण उसकी देखने और सुनने की शक्ति नष्ट हो गई। उसने इस समय का हाल स्वयं लिखा है—

अपने जीवन के आरम्भ के १६ महीनों में हरे-भरे खेत, रंग-बिरंगे फूल, स्वच्छ आकाश और बड़े-बड़े वृक्षों की झलक जो मुझे मिली थी वह अंधापन और बहरापन नष्ट न कर सकी।

कुन्ती—अर्थात् जो कुछ उसने उस छोटी अवस्था में देखा था उसे बराबर उसकी स्मृति बनी रही।

डाक्टर साहब—हाँ, उसका ध्यान और उसका मन बराबर काम में लगा रहता था। आरम्भ में तो उसने वार्तालाप का एक नया ढंग निकाला था। जब उसे 'हाँ' कहना होता, तो वह अपने सिर को जरा-सा आगे बढ़ा देती और जब 'नहीं' कहना होता वह अपना सिर इधर-उधर हिला देती। हाथों को धक्का देने का अर्थ 'जाओ' होता और अपनी ओर खींचने का अर्थ 'आओ' होता था। जब वह अपनी माता जी से मलाई की बर्फ़ माँगती, तो तुम जानती हो वह क्या करती थी? जिस भाँति बर्फ़ जमाने की मशीन घुमाई जाती है उसी भाँति

वह अपने हाथों को घुमाती और अपने बदन को कँप-कँपाने लगती। जब रोटी माँगना चाहती तो ठीक उसी भाँति अपने हाथों को चलाती, जिस भाँति रोटियाँ बनाने और फैलाने में हाथ चला करते हैं। इस ढंग से उसकी माता उसका आशय समझ जाया करती।

हेलेनकिलर का पिता एक बार उसे डाक्टर अलेक्ज़ेण्डर ग्रेहमवेल के पास ले गया। अलेक्ज़ेण्डर ग्रेहमवेल का हाल तो तुमने पढ़ा ही होगा ? उसने ही टेलीफ़ोन का आविष्कार किया है। लेकिन वह भी इस बेचारी के लिए कुछ भी न कर सका। लेकिन उसने एक अध्यापिका का पता बता दिया, जिसका नाम श्रीमती मैकी था। जिस समय श्रीमती मैकी हेलेनकिलर को पढ़ाने के लिए आई उस समय हेलेनकिलर की आयु ६ साल ८ माह की थी। हाथों की सहायता से उसने बड़ी कठिनता से दो शब्द याद किये—एक गुड़िया और दूसरा रोटी। एक दिन हेलेन अपनी अध्यापिका के साथ घूमने गई। वहाँ श्रीमती मैकी ने उसे प्याले और पानी के शब्दों को सिखाया और इन शब्दों के हिज्जे करना सिखला दिया। इस भाँति शब्दों का भेद उसकी समझ में आ गया और वह यह जान गई कि प्रत्येक वस्तु का एक नाम है और हर नाम के हिज्जे उँगली पर किये जा सकते हैं। श्रीमती मैकी इसके पश्चात् प्रत्येक शब्द के हिज्जे इसको

उँगलियों-द्वारा कराने लगीं। अब हेलेन को पढ़ने की रुचि इतनी अधिक बढ़ी कि एक ही दिन में उसने ३० शब्द कंठ कर लिये। धीरे-धीरे उसने एक मास में लगभग १०० शब्द याद कर लिये। अपनी शिक्षा के चौथे मास में वह कुछ-कुछ छोटे बच्चों की भाँति लिखने भी लगी और ६ महीने के उपरान्त वह छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़ने लगी। इन कहानियों की लिखावट 'ब्रेलतरीक़' ढंग की थी।

कुन्ती—'ब्रेलतरीक़' किसे कहते हैं ?

डाक्टर साहब—ब्रेलतरीक़ उस लिखावट को कहते हैं, जो अन्धों के लिए लिखी जाती है। इसमें अक्षर उभरे हुए होते हैं। उभरे अक्षरों को अन्धे लोग टटोलकर उसकी बनावट समझ सकते हैं। खैर! हेलेन अब भूगोल, इतिहास, अँगरेजी तथा वनस्पति-विज्ञान की पुस्तकें जो अमेरिका के स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं, आसानी से पढ़ने लगी। हेलेनकिलर में स्वभाव से ही प्रत्येक वस्तु को सीखने और समझने की जिज्ञासा थी। इस समय तो वह केवल उँगलियों के द्वारा ही शब्दों को समझ पाती थी। अब उसे बोलने के लिए भी शिक्षा देनी आरम्भ की गई। ऐसा पता चलता था कि शब्द निकालने की उसे अत्यन्त इच्छा होती थी। अतएव एक स्कूल में जहाँ बोलने की शिक्षा दी जाती थी, उसका नाम लिखा दिया गया। वहाँ एक

साल शिक्षा पाने के पश्चात् जब वह घर आ रही थी तो उसने अपनी अध्यापिका श्रीमती मैकी से कहा—'मैं गूँगी नहीं हूँ।' उस समय से उसके बोलने और ओठों की सहायता से शब्दों के उच्चारण पर अधिक ध्यान दिया गया। इसी भाँति उसने फ्रेंच तथा लैटिन भाषायें भी सीखनी आरम्भ कर दी और उन सभी विषयों का अध्ययन करने लगी, जो रेड क्लब कालेज़ में पढ़ाये जाते हैं।

रेड क्लब कालेजवालों ने हेलेन का नाम लिखने से इनकार कर दिया था, क्योंकि उनका कहना था कि अंधी और बहरी लड़की कालेज का काम नहीं कर सकती। लेकिन हेलेनकिलर ने उन्हें लिखा कि "एक अच्छा सिपाही लड़ाई लड़ने के पहले ही हार स्वीकार नहीं कर सकता।" इसका यह फल हुआ कि एण्ट्रेंस पास होते ही वह कालेज में ले ली गई।

कालेज के पाठ्य-क्रम में लैटिन यूनानी, फ्रेंच तथा अँगरेज़ी भाषायें थीं। अर्थशास्त्र, इतिहास तथा दर्शन भी पढ़ाये जाते थे। इन विषयों की पुस्तकें उभरे हुए अक्षरों में अप्राप्य थीं इसलिए एक-एक शब्द के हिज्जे उसकी उँगलियों पर करके बताये जाते थे। श्रीमती मैकी उसके साथ कालेज जाती थीं और जब प्रोफेसर साहब लेक्चर देते थे तो वह हेलेन की हथेली पर उन शब्दों के हिज्जे करके बताती जाती थीं। तुम ख़ुद समझ सकती हो कि यह काम कितना कठिन था।

सारांश यह कि अब बी० ए० की परीक्षा का समय आगया और हेलेन एक अलग कमरे में परीक्षा देने के लिए बिठला दी गई। उस समय उसके पास कोई भी उसकी जान-पहचान का न था। उसने अपने पर्चों के उत्तर टाइप राइटर के द्वारा लिखना आरम्भ किया। उस समय कोई भी तो उसके पास न था जो कम से कम जो उत्तर उसने लिखे थे उन्हें पढ़कर ही सुना देता। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी उसने अपने पर्चे बहुत ही अच्छे किये और वह ऑनर्स के साथ बी० ए० पास हो गई।

चौधरी साहब—यह कहा जाता है कि देखने और सुनने की शक्ति का नाश हो जाता है, तो दूसरी आन्तरिक शक्तियाँ बलवान् हो जाती हैं।

डाक्टर साहब—हाँ, ऐसा देखा तो प्रायः जाता है मगर हेलेन-किलर ने अपने एक भाषण में कहा था कि—

"यह विचार सत्य नहीं है कि देखने और सुनने की शक्तियाँ नष्ट हो जाने पर दूसरी शक्तियाँ बलवान् हो जाती हैं। सत्य तो यह है कि परिश्रम और अभ्यास शक्तियों को बलवान् बना देते हैं।"

मिस हेलेनकिलर इसके बाद अन्धों और बहरों की शिक्षा में जुट गई और उसने इन लोगों के लिए बहुत-सी पुस्तकें लिखीं जिनमें कुछ के अनुवाद कई भाषाओं में किये जा चुके हैं। इस जनश्रुति को कि "अंधे को अंधा मार्ग नहीं दिखा सकता"

मिस हेलेन ने इसे झूठ प्रमाणित कर दिया। अंधों और बहरों की तो कौन कहे, वे लोग जिनकी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ सुरक्षित हैं, हेलेन के पथ-प्रदर्शन के इच्छुक हैं।

कुन्ती—डाक्टर साहब! यह तो निस्सन्देह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि एक अन्धी और बहरी लड़की बी० ए० पास कर ले और फिर पुस्तकें लिख-लिखकर अन्धों और बहरों को शिक्षित बनावे।

डाक्टर साहब—और यह भी तो कहो कि लोगों की बड़ी-बड़ी भीड़ों में भाषण भी दे।

नन्दकिशोर—क्या वह बड़ी बड़ी सभाओं में भाषण भी देती है।

डाक्टर साहब—जी हाँ, वह भाषण भी देती है। मुझे भी उसके भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

नन्दकिशोर—(प्रबल जिज्ञासा से) क्या आपने उसे देखा है? और उसका भाषण भी सुना है?

डाक्टर साहब—हाँ मैंने उसे देखा भी है और उसका भाषण भी सुना है। मिस हेलेन एक सुन्दर और स्वस्थ युवती है। वह कोमलांगी तथा तेजस्विनी है। उसके चेहरे से स्फूर्ति तथा कुशाग्रता टपकी पड़ती है। आकर्षण भी उसमें अधिक है। जब वह मंच पर भाषण देने के लिए आती है तो उसकी वेश-भूषा बड़ी मनोहारी होती है। गुलाबों के ताजे फूलों का एक गुच्छा कमर में

लटकता रहता है। उसका भाषण 'सच्चे आनन्द' पर था। मगर उसने अपने भाषण का आरम्भ यों किया—

कुमारी हेलेनकिलर का भाषण

सज्जनो ! मैं बहरी थी, मगर अब सुनती हूँ। मैं अन्धी थी मगर अब देखती हूँ। मैं गूँगी थी मगर अब बोलती हूँ।

ये वाक्य इस ओजपूर्ण तथा मनोहारी ढंग से कहे गये कि श्रोतागणों का ध्यान स्वयं उसकी ओर आकर्षित हो गया। इसके पश्चात् उसने 'सच्चे आनन्द' पर बड़ी ही मधुर भाषा में बोलना आरम्भ किया। उसने कहा—

"आनन्द से मेरा अर्थ उस आनन्द से है जिसे प्राप्त करना प्रत्येक मानव का अन्तिम उद्देश है। यह सच्चा आनन्द केवल 'प्रेम' है। जिस समय हम 'प्रेम' में मग्न होते हैं उस समय हमें सच्चा आनन्द प्राप्त हो जाता है। लेकिन जिस भाँति कभी-कभी सूर्य्य बादलों में छिप जाता है उसी भाँति हमारे जीवन का सच्चा आनन्द सांसारिक झंझटों में पड़कर छिप जाता है। सच्चा आनन्द केवल अपने ही को प्रसन्न करने में नहीं है। यह तो है स्वार्थ, और स्वार्थ में सच्चा आनन्द कहाँ ? वरन् हमारा यह परम धर्म है कि दूसरों के जीवन को सुखी बनावें।"

चौधरी साहब—निस्सन्देह उसके विचार बड़े उच्च तथा उदार हैं।

डाक्टर साहब—मिस हेलेन जिस समय यह कह रही थी मैं वर्णन नहीं कर सकता उस समय श्रोताओं की कैसी दशा थी। उसका उच्चारण इतना मधुर, उसकी भाषा इतनी प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण थी कि श्रोताओं की आँखें सजल हो गईं। हाँ, यह अवश्य था कि उसका शब्द स्वाभाविक नहीं जान पड़ता था और वह हो भी कैसे सकता था? उसने १½ वर्ष की अवस्था से न तो किसी मनुष्य का मुख देखा था और न उसकी आवाज़ ही सुनी थी। छूने और सूँघने के अतिरिक्त उसके पास और कोई साधन ही न था। फिर भी कोई श्रोता ऐसा न था जो उसके भाषण से प्रभावित न हुआ हो। अन्त में उसने कहा—

"आनन्द केवल इसमें नहीं है कि हम जो कुछ चाहते हैं हमें मिल जाय। वरन् आनन्द प्रेम में है और प्रेम का अर्थ है 'सेवा'। सेवा ही से सारा संसार मोक्ष पा सकता है।"

सभा की समाप्ति पर कुछ लोगों ने उससे कुछ प्रश्न पूछना चाहा और यही समय अत्यन्त मज़ेदार था। मिस हेलेन ने अपने बाँयें हाथ का मोज़ा उतार दिया और श्रीमती मैकी (जो उसके निकट ही बैठी थी) के चेहरे पर अपना हाथ इस ढंग से रक्खा कि उँगलियाँ श्रीमती मैकी के मुख पर थीं। अँगूठा गले पर था और बाक़ी उँगलियाँ ओठों पर थीं। लोग जो कुछ पूछते थे श्रीमती मैकी उन प्रश्नों को दुहराती जाती थीं

और मिस हेलेन उन प्रश्नों को अपनी उँगलियों के द्वारा जो श्रीमती मैकी के मुख पर थीं प्रश्नों को समझती जाती थी।

कुन्ती—डाक्टर साहब! कौन-कौन-से प्रश्न उससे पूछे गये? क्या आपको याद हैं?

डाक्टर साहब—सबसे पहले उससे यह प्रश्न पूछा गया कि 'क्या तुम बतला सकती हो कि इस कमरे में कितने आदमी हैं?' इस प्रश्न से उसके चेहरे पर गम्भीरता छा गई और फिर उसने आँखोंवाले आदमी की भाँति अपनी दायीं और बाँयी ओर देखा फिर थोड़ी देर तक चुप रही इसके बाद एक लम्बी साँस लेकर कहने लगी।

मिस हेलेनाकलर—यहाँ, यहाँ काफ़ी संख्या में आदमी मालूम हो रहे हैं। लगभग १००-१२५ आदमी होंगे। यह मुझे इस भाँति मालूम हो रहा है कि यहाँ की वायु भरी हुई तथा बजनी है।

प्रश्न—तुम भाषण क्यों देती हो?

हेलेनाकलर—(गम्भीरता से मुस्कुराकर) इसलिए कि मुझे बोलने में आनन्द आता है।

प्रश्न—क्या तुम कोई बाजा बजा सकती हो?

हेलेन०—हाँ, मैं हाथ का 'अरगन' बाजा बजा सकती हूँ।

प्रश्न—क्या तुम्हें फूल पसन्द है?

हेलेन०—फूल ही तो मेरे जीवन का सुख है।

प्रश्न—विश्वविद्यालय में शिक्षा पानेवाली लड़कियों के लिए कोई तुम्हारा सन्देश है ?

हेलेन०—हाँ, है। और वह यह कि दिन-रात खूब परिश्रम करें। लड़के और लड़कियाँ दोनों।

नन्दकिशोर—डाक्टर साहब! एक अन्धे और बहरे मनुष्य का इस भाँति प्रश्नों का उत्तर देना एक बहुत ही बड़े आश्चर्य की बात है।

डाक्टर साहब—इसी लिए तो मिस हेलेनकिलर हमारे समय का एक असाधारण व्यक्तित्व है। मेरे ख्याल से तो इस विद्या की गणना एक असाधारण विद्या में होना चाहिए।

कुन्ती—हाँ! तो बताइए इन प्रश्नोत्तरों के पश्चात् क्या हुआ।

डाक्टर साहब—जब हेलेनकिलर ने प्रश्नों के उत्तर दे दिये तो सहसा बड़ा शोर मचा। मिस हेलेन उसी समय अपनी गुरुआनी श्रीमती मैकी के हाथ में हाथ डालकर प्लेटफ़ार्म से उठ खड़ी हुई और अपनी प्रशंसा में मचे हुए शोर के उत्तर में सिर झुकाकर बड़ी शान से चल दी। मिस हेलनकिलर के जीवन तथा उसकी अमूल्य शिक्षाओं का सार मैं उसकी ही लिखी हुई किताब के एक निबंध के कुछ भाग को पढ़कर सुनाता हूँ। उसने लिखा है—

"मेरा ईश्वर और मनुष्य दोनों ही में विश्वास है। मैं आत्मा की शक्ति को भी मानती हूँ। मेरा विचार ही नहीं

वरन् दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य का परम श्रेष्ठ कर्त्तव्य यह है कि वह अपने साथी दूसरे मनुष्यों की सहायता करे तथा उन्हें उत्साह दिलावे। उसे ईश्वरकृत संसार के विरुद्ध एक शब्द भी न निकालना चाहिए। इसलिए कि ईश्वर ने इसे सुन्दर ही बनाया है और हज़ारों महान् आत्माओं ने इसकी अच्छाइयों को स्थिर रखने के लिए घोर तपस्यायें की हैं। हमारे जीवन का ढङ्ग ऐसा होना चाहिए कि हम इस काल को अपने बहुत ही निकट पावें और कोई मनुष्य दूसरे के कष्टों से अपने सुख का प्रबन्ध न करे।"

'अमेरिकानिवासियों का देश-प्रेम'

चौधरी साहब की काव्य-चर्चा आजकल बहुत कुछ कम हो गई है। इसलिए नहीं कि अब उन्हें काव्य से प्रेम नहीं है। पहले वे केवल शब्दों और उच्च कल्पनाओं पर अधिक ध्यान देते थे. लेकिन अब वे इँगलेंड के प्रसिद्ध लेखक जॉन रसकिन के विचारों से प्रभावित हो गये हैं, अब वे उपयोगिता तथा लोक-कल्याण की भावना के प्रशंसक हैं। काव्य-चर्चा से जितना आनन्द उन्हें आता था, अब वे चाहते हैं कि उतना ही आनन्द प्रत्येक मनुष्य को मिलना चाहिए। काव्य में भी अब वे लोक-कल्याण की भावना देखना चाहते थे। और सत्यता भी यही है कि काव्य का सत्य और सही अर्थ लोक-कल्याण ही है। आज शाम को चौधरी साहब ने डाक्टर साहब से पूछा कि अमेरिका

में भिन्न-भिन्न धर्मों तथा जातियों के लोग बसते हैं, क्या उनमें पारस्परिक कोई भी विरोध की बात नहीं है ?

'अमेरिकावाद'

डाक्टर साहब—सत्य तो यह है कि विचार-वैषम्य मानव प्रकृति है। जिस भाँति मनुष्यों की सूरतें भिन्न-भिन्न हैं उसी भाँति उनके विचार भी भिन्न होने चाहिए। परन्तु अमेरिकानिवासियों में यह विचार-भिन्नता केवल व्यक्तिगत ही है। उनके विचार ऐसी किसी भी बात पर भिन्न नहीं होते जिससे देश या जाति की हानि हो जावे।

आप ध्यान दीजिए। संयुक्त-राज्य अमेरिका में ६५ जातियाँ निवास करती हैं और लगभग ७३ भाँति की भाषायें बोली जाती हैं। शिकागो ही में ४० बोलियाँ बोली जाती हैं। लेकिन इन सब बातों के होते हुए भी प्रत्येक अमेरिकानिवासी देश-प्रेम का दीवाना है। बाहर के लोग जो यहाँ आकर बसते हैं, उनमें भी देश-प्रेम की लगन लग जाती है। और जहाँ तक देशोन्नति का सम्बन्ध है उन लोगों में कोई विचार-भिन्नता नहीं पाई जाती। यह देश-प्रेम जो यहाँ के प्रत्येक निवासी में एक-सा है, अमेरिकावाद कहलाता है।

अमेरिकानिवासियों का देश-प्रेम उनके धर्म, भाषा और जाति सबसे श्रेष्ठ है। देश-प्रेम में वे सब एकमत हैं। इसी

कारण वहाँ का प्रत्येक निवासी एक दूसरे की भाषा, संस्कृति तथा धर्म का आदर करता है और यदि कोई व्यक्ति कोई ऐसी बात कहता या करता है जो दूसरे धर्म, जाति या भाषा की शान के खिलाफ़ होती है तो क़ानून उसे रोक दिया जाता है। वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति खुले हुए शब्दों में यह कह देता है कि यदि तुम्हें हमारा देश प्यारा नहीं लगता तो इसे छोड़ दो। अमेरिका का राज्य प्रबन्ध ही इस ढंग का है कि जो सब करते हैं तुम भी वही करो। जो चाल सब चलते हैं तुम भी वही चाल चलो।

यद्यपि अमेरिकानिवासी स्वतन्त्र हैं, परन्तु साम्यवाद की भावना उनमें बहुत निर्बल है। साम्यवाद का अर्थ यही है कि सब लोग बराबर हैं और यह तो प्रत्यक्ष ही है कि यह सिद्धान्त सत्य एवं सुन्दर है। अमेरिकानिवासी भी इस सिद्धान्त के राग अलापते हैं, इसे अच्छा बताते हैं। परन्तु देखनेवाले यह देख सकते हैं कि यद्यपि वहाँ जाति-पाँति का विभाजन नहीं है फिर भी उनमें छोटे-बड़े का ध्यान रक्खा जाता है। यह विभाजन रंग और धन पर अवलम्बित है। यह ठीक है कि वहाँ के धनी लोग, वे चाहें जिस भाँति धन कमाते हों, धन के सदुपयोग की महत्ता जानते हैं। उनकी दृष्टि में धन की उपयोगिता इसी में है कि उससे औषधालय, विश्व-विद्यालय, पुस्तकालय आदि लोक-कल्याणकारी संस्थायें खोली जावें।

राज्य की नीति यह है कि शासन-भार उन्हीं के हाथों में दिया जाता है, जिन्हें जनता पसन्द करती है और इसमें धनी या निर्धन दोनों को एक-सा ही अवसर प्राप्त है। स्वतन्त्रता-प्रेमी होने के नाते आपको वहाँ एक भी आदमी ऐसा न दिखाई देगा जो टोपी उतारे, हाथ जोड़े, श्रीमान्, अन्नदाता आदि वाक्य कहता हो। प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता है कि वह अपनी उन्नति के लिए जिस पथ का अनुगामी बनना चाहे बन सकता है। इसी कारण वहाँ के लोगों में दिन प्रतिदिन व्यापार-सम्बन्धी परिवर्तन होते रहते हैं। आज जो व्यक्ति डाक्टर है वही कल एक किसान बन जाता है। जो आज वकील है वह कल एक दूकानदार बन जाता है। आशय यह कि पेशे और काम में प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है।

महत्त्वाकांक्षायें भी स्वतन्त्रता का एक स्वाभाविक लक्षण है और उन्नति तथा सफलता का यह मूल मंत्र है। अमेरिका-निवासियों में इस गुण का आधिक्य है और उनका दृढ़ विश्वास है कि यदि मनुष्य अपने विचारों और शक्तियों का उचित रीति तथा स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयोग करता है तो उसे अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में कोई अड़चन नहीं पड़ सकती। यही कारण है कि अमेरिका दिन-प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर चढ़ता चला जा रहा है। वे लोग आलस्य से घृणा करते हैं। कार्यशीलता में ही उन्हें आनन्द आता है। वे जो कुछ सोचते हैं उसे कार्यरूप में परिणत करने के साधन जुटाते हैं, केवल

वार्तिक विचारों से वे सन्तुष्ट नहीं होते। आप एक अमेरिकन को चाहे बना लें, पर वह साधू और संन्यासी कभी नहीं बन सकता। आप एक उन्नतिशील व्यक्ति से यह कह सकते हैं कि जो कुछ मनुष्य ने किया है, उसे मनुष्य कर सकता है। परन्तु अमेरिकानिवासियों ने इसके आगे भी क़दम बढ़ा दिया है। उनका कहना है कि मैं वह करूँगा जो अभी तक किसी भी मनुष्य ने नहीं किया है। उन लोगों की दृष्टि उस वस्तु पर रहती है जो अभी तक नहीं हुई है। वे पुराने ढंगों को बदलकर नया रूप देने के हामी हैं। वे चाहते हैं कि हम लोग ऐसे कार्य करें, जिससे संसार में एक क्रान्ति-सी मच जाय, दुनिया में एक नई धारा प्रवाहित हो जावे। यद्यपि अमेरिका आज संसार का सबसे धनी देश है फिर भी वे लोग अपनी इस दशा से सन्तुष्ट नहीं हैं वरन् इससे भी अधिक अच्छी दशा में रहने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं। 'कर्म ही मानव का महत्त्व है' यह भारतवर्ष का मंत्र आज अमेरिकावाले जप रहे हैं।

कार्य प्रियता

संसार का प्रत्येक मनुष्य इसी लिए काम करता है कि अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सके। परन्तु अमेरिकानिवासी सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए भी काम में लगे रहते हैं। कदाचित् उन्होंने यही समझ लिया है कि काम करने में ही सच्चा आनन्द है। क्योंकि कभी-कभी तो उनके काम करने का

उद्देश ही यह जान पड़ता है कि काम करने ही में उन्हें सच्चा सुख प्राप्त होता है। मैंने एक वृद्ध आदमी से पूछा कि तुम इतना अधिक परिश्रम क्यों करते हो? उसने उत्तर दिया कि मुझे नहीं मालूम कि मैं क्यों इतना कठोर परिश्रम करता हूँ। परन्तु मैं यह जानता हूँ कि मुझे हर घड़ी कुछ न कुछ काम करने को चाहिए।

शीघ्रता तथा स्फूर्ति

अमेरिकानिवासियों का जीवन उत्साह और स्फूर्ति का जीवन है। प्रत्येक कार्य को शीघ्रता तथा उत्साह से करने का उन्हें शौक़-सा जान पड़ता है। एक बच्चे को जो पहली बात बताई जाती है वह यह है कि शीघ्रता करो। समय का मूल्य उनके लिए बहुत है। रेल की लाइन निकालने में यदि दो-एक मिनट की भी बचत होती है तो लाइन को ख़म देकर उसे निकाल लाते हैं और इस ख़म देने में उनका लाखों रुपयों का व्यय हो जाता है। बाज़ारों में जाते हुए बहुत-से साइन बोर्डों पर यह लिखा हुआ नज़र आता है कि "प्रत्येक कार्य बड़ी ही शीघ्रता से किया जाता है।" जूते बनानेवाले, जूतों पर पालिस करने-वाले, आशय यह कि हर-एक आदमी शीघ्रता से काम कर देने को तैयार दिखाई देता है। भोजन करने में उनकी शीघ्रता देखकर निस्सन्देह बड़ा ही आश्चर्य होता है। पता नहीं इतनी शीघ्रता से भोजन करने में उनके पेट की क्या दशा होती

होगी। छुरी-काँटे का इस फुर्ती से इस्तेमाल करते हैं कि देखते ही बनता है। उन लोगों की शीघ्रप्रियता के बारे में एक फ्रांसनिवासी ने ठीक ही कहा है—"अमेरिकानिवासी शीघ्र जन्म लेता है, शीघ्र खाना खाता है, शीघ्र ही अमीर होता है और शीघ्र ही मर जाता है।"

सादगी

दूसरे देशों में जिसे सभ्यता या शिष्टाचार कहते हैं वह अमेरिका में ढूँढ़े भी नहीं मिलता। इस कारण लोगों का यह विचार है कि यदि शीघ्र ही कोई क्रान्ति अमेरिका में न हुई तो शिष्टाचार का नाम ही अमेरिका के कोष से निकल जायगा। योरोपीय देशों में शिष्टाचार यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि मालिक अपने नौकर से और मैजिस्ट्रेट अपराधी से भी Sir अर्थात् महाशय कहकर सम्बोधित करेगा। यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि एक बार नैपोलियन के एक दोस्त ने डाकू के कोट का कालर पकड़कर कहा था कि 'महाशय जी आप बदमाश हैं।' आशय यह कि एक आदमी से कितनी ही घृणा की जाय, उसे दण्ड दिया जाय, पर उसका सम्बोधन महाशय' शब्द-द्वारा ही किया जायगा। परन्तु अमेरिका में इस (सर) महाशय जी का इतना प्रचार नहीं है।

अमेरिकानिवासी बड़े ही स्पष्टवक्ता हैं। एक अँगरेज़ की यह घटना प्रसिद्ध है कि एक बार वह एक नदी के किनारे

खड़ा हुआ था। मगर एक डूबते हुए मनुष्य को उसने सिर्फ़ इसी लिए बचाया नहीं था कि वह एक अपरिचित आदमी था। मगर अमेरिका के लोग इस भाँति के मनुष्य नहीं हैं। होटल हो या नाटकघर, स्टेशन हो या पार्क। वे बिना किसी हिचकिचाहट के तुमसे दियासलाई माँग लेंगे, समाचार-पत्र पढ़ने को माँग लेंगे, समय पूछ लेंगे और मज़ा यह कि इन सब बातों को वे ज़रा भी भद्दी या अपमानजनक नहीं समझते। हाँ, यह सत्य है कि वे अपमान कभी भी सहन नहीं कर सकते और ऐसी दशा में वे लड़ने-मरने को तैयार हो जावेंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे असभ्य हैं या वे अपने क्रोध को रोक नहीं सकते। उनके मिज़ाज को वे लोग भली भाँति जानते हैं जिन्हें उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। वे छल, कपट, तथा बनावट से बहुत दूर हैं। वे बड़े ही स्पष्टवक्ता तथा स्वतंत्र विचार के मनुष्य होते हैं। उन्हें जो कुछ कहना होता है वे खुले हुए शब्दों में कह देते हैं। उनके यहाँ अगर, मगर और साफ़ बात कहने में हिचक की ज़रा भी गुज़र नहीं है।

'सहभोजों में निमंत्रणों की सादगी'

उनमें 'श्रीमान्, आदरणीय' आदि झूठे और अनावश्यकीय शिष्टाचार के सम्बोधन का प्रचार बिलकुल ही नहीं है। वे इस भाँति की शाब्दिक सभ्यता के लिए कहते हैं कि मेरे पास व्यर्थ

का समय नहीं है जो इन असत्य बातों में व्यय करें। सत्य तो यह है कि उनका जीवन वास्तविक जीवन है। उन्हें इतना समय कहाँ कि वे इन सुन्दर पर व्यर्थ के शिष्टाचार में अपना अमूल्य समय नष्ट करें जो साधारणतः आलस्य और बेकारी का फल है। लेकिन जहाँ तक सच्चे और मानवीय शिष्टाचार का सम्बन्ध है वे बहुत ही आगे बढ़े हुए हैं। यह हो सकता है कि हम भारतीय उनकी मिलनसारी तथा शिष्टाचार को न समझ सकें, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि वे जंगली हैं। दूसरे के लिए क्या कहें, मैं स्वयं ही बहुत-से सहभोजों में सम्मिलत नहीं हुआ। इसका कारण केवल यही था कि आरम्भ में मैं उनके मिज़ाज से परिचित न था। निमंत्रण देने में उनका यह ढंग है कि वे कहेंगे कि आप मेरे साथ भोजन करने आइएगा। मैं उत्तर में कह देता बड़े शौक़ से और बात ख़त्म हो जाती। मैं ठहरा भारतीय, भला दस-बारह बार भी मुझसे भोजन के लिए निमंत्रण न दिया जाय तो भला मैं कब जाने लगा। लेकिन धीरे-धीरे मुझे उनके रहन-सहन के बारे में जानकारी हो गई और मैं समझ गया कि जिस भाँति वे लोग सादगी से निमंत्रण देते हैं उसी भाँति मुझे भी बिना किसी शिष्टाचार के उनका निमंत्रण स्वीकार कर लेना चाहिए।

चौधरी साहब—यह बिलकुल ठीक भी है। व्यर्थ का शिष्टाचार जो हम लोगों के जीवन में बुरी तरह घुस गया है एक

घृणित चीज़ है। विशेषकर आपस में शिष्टाचार बड़ा ही भद्दा ज्ञात होता है।

डाक्टर साहब—क्षमा कीजिएगा, किसी की प्रशंसा उसके ही सम्मुख अच्छी नहीं लगती। मुझे आपसे मिलने में इसी कारण आनन्द आता रहा है कि आपमें प्रेम-भाव के साथ ही साथ खुले दिल से बात करने की सादगी पाई जाती है।



बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।